जुलाई-दिसम्बर, अंक 3-4 वर्ष-1 (2024)

संयुक्त अंक

A Peer reviewed Journal

वितस्ता विमर्श

हिंदी भाषा,साहित्य, संस्कृति व समीक्षा को समर्पित

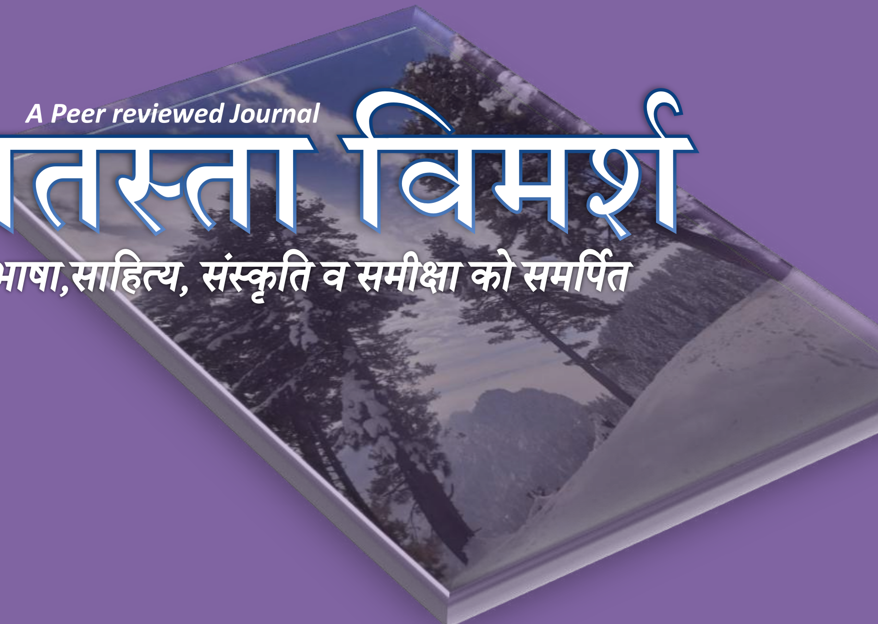

सम्पादक

डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट

वितस्ता विमर्श

हिंदी भाषा, साहित्य, संस्कृति व समीक्षा को समर्पित

संयुक्त अंक

सम्पादक
डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट
श्रीनगर, जम्मू व कश्मीर
ईमेल- mudasirhindi@gmail.com
मो. 9682593408

वितस्ता विमर्श एक अव्यवसायिक त्रैमासिक ई-पत्रिका है।
वर्ष में ४ अंक प्रकाशित होंगे
१-१५ अप्रैल तक जनवरी-मार्च अंक
१-१५ जुलाई तक अप्रैल-जून अंक
१-१५ अक्टूबर तक जुलाई-सितम्बर अंक
१-१५ जनवरी तक अक्टूबर-दिसम्बर अंक
प्रत्येक अंक के लिए रचनाएँ भेजने, दिशा-निर्देश तथा अन्य जानकारी www.vitastavimarsh.com पर

© *सर्वाधिकार सुरक्षित*

वितस्ता विमर्श अहिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र श्रीनगर, जम्मू व कश्मीर से प्रकाशित होने वाली प्रथम त्रैमासिक ई-पत्रिका है। अतः इस पत्रिका के साथ जुड़ें और हमें सहयोग दें। vitastavimarsh1@gmail.com पर अपनी रचनाएँ प्रेषित करें और अपने सुझावों से पत्रिका को समृद्ध करें।

वितस्ता विमर्श पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं व आलेखों की मौलिकता का दायित्व स्वयं रचनाकारों, लेखकों का है। रचनाओं व आलेखों में व्यक्त विचारों से संपादक व संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद में न्यायक्षेत्र केवल श्रीनगर, जम्मू व कश्मीर होगा।

सम्पादक

डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट

श्रीनगर, कश्मीर

email: mudasirhindi@gmail.com

Cell: 9682593408

सह सम्पादक

डॉ. अमृता सिंह

श्रीनगर, कश्मीर

email: amrita.ku26@gmail.com

Cell: 9622911777

परामर्श मंडल

प्रो. ज़ोहरा अफ़ज़ल

प्रो. ज़ाहिदा जबीन

प्रो. कहकशां एहसान साद

श्री अनिल शर्मा जोशी

प्रो. संजय एल. मादार

प्रो. मुहम्मद मेराज अहमद

डॉ. सतीश विमल

प्रो. विनोद कुमार तनेजा

प्रो. रुबी ज़ुत्शी

प्रो. मुहम्मद आशिक अली

प्रो. जय कौशल

प्रो. करण सिंह ऊटवाल

प्रो. महबूब सुबानी

सम्पादक मण्डल

डॉ. शगुफ्ता नियाज़

डॉ. नाइरा कुरैशी

डॉ. नरेश कुमार सिहाग

श्री विशाल कुमार

डॉ. सुशीला आर्या

डॉ. सब्ज़ार अहमद भट्टू

डॉ. रेखा सोनी

इस अंक में

सम्पादकीय- हिन्दू-धर्म, शैव-मत तथा इस्लाम की सांझी संस्कृति का नाम है कश्मीर

वैचारिक खंड **11-12**

समाज सुधारक थे डॉक्टर राम मनोहर लोहिया- अंकुर सिंह

इतिहास/विरासत खंड **13-16**

हज़रत अमीर ख़ुसरो के दोसुख़ने और हरियाणवी लोक संस्कृति- सीताराम गुप्ता

बदलता कश्मीर **17-26**

जी-20 की अध्यक्षता से जम्मू-कश्मीर का विश्व को सन्देश -विवेक मिश्र

विमर्श खंड **27-43**

दक्षिण भारत में हिंदी का विकास और अनुवाद- डॉ. प्रियंका कुमारी

हिंदी गद्य साहित्य की सशक्त विधा है रेखाचित्र- गौरीशंकर वैश्य

कथा खंड **44-48**

रामधु- डॉ. सतीश "बब्बा"

काव्य खंड **49-56**

ललन चतुर्वेदी की कविताएं

वितस्ता खंड **57-76**

मेरी कश्मीर यात्रा : एक कश्मीरायण- प्रो. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर

हिन्दू-धर्म, शैव-मत तथा इस्लाम की सांझी संस्कृति का नाम है कश्मीर

कश्मीर भारत का एकमात्र ऐसा राज्य था जो प्राचीन काल से ही संस्कृत का अध्ययन केन्द्र रहा। ऐसा माना जाता है कि संस्कृत भाषा कश्मीर घाटी में पूर्वी ईरान से विकसित होती हुई 'आर्य सभ्यता' के माध्यम से अफ़ग़ानिस्तान-पाकिस्तान से होते हुए गंगा मैदान तत्पश्चात पंजाब से होकर पहुंची और आर्य वंशजों ने इसे अर्थात् संस्कृत को यहाँ की प्रधान भाषा बना दिया। जार्ज ग्रियर्सन अपने दस्तावेज़ में लिखते हैं "बीते दो हज़ार सालों के दौरान कश्मीर संस्कृत के पठन-पाठन का सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। यहाँ संस्कृत में दार्शनिक विमर्श से लेकर श्रृंगार कथाओं तक की रचना हुई।"

राजतरंगिणी में कल्हण लिखते है कि 'कश्मीर को आध्यात्मिक शक्ति से तो जीता जा सकता है लेकिन सैन्य शक्ति से नहीं।' निश्चित यह कटु-सत्य है कि सैन्य शक्तियाँ किसी भी समस्या का समाधान नहीं है और न हो सकती है। कश्मीर प्रान्त साहित्यिक, भाषिक या काव्यशास्त्रीय दृष्टि से ही समृद्ध नहीं है अपितु प्राचीन काल से यहाँ की धार्मिक गतिविधियों में भी विविधता दिखाई देती है। प्राचीनकाल में कश्मीर बौद्ध-धर्म का पालनहार रहा है। यहां से होकर सिल्क रूट से ही बौद्ध धर्म के अनुयायी और भिक्षु चीन, तिब्बत और दूसरी ओर मध्य एशिया में आया-जाया करते थे। इस आलेख में कश्मीर में बौद्ध दर्शन के प्रचार-प्रसार तथा प्रभाव को विश्लेषित करने का प्रयास किया जाएगा तथा इस दर्शन के प्रभाव के परिणामस्वरूप कश्मीर की सामाजिकता में क्या परिवर्तन हुए है, उसका गहनता से अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा।

कश्मीर में बौद्ध-धर्म का अधिक प्रचार-प्रसार सम्राट अशोक के युग में हुआ। कल्हण लिखते हैं- 'इसमें कोई संदेह नहीं है कि कश्मीर अशोक की राजधानी पाटलिपुत्र से बहुत दूर था, परन्तु अशोक के शासन के सारे लाभ उसे

मिलते थे। उस समय कश्मीर की आर्थिक स्थिति भी बहुत अच्छी थी। यह सत्य है कि सम्राट अशोक के समय में बौद्ध धर्म को घाटी में खूब प्रश्रय मिला लेकिन बड़ा विस्तार कुषाण वंश के प्रतापी राजा कनिष्क (78 ई. से 144 ई. तक) के समय हुआ।' इस कड़ी में पहली बार बौद्ध ग्रंथ की भाषा प्राकृत की जगह संस्कृत हो गई। बौद्ध-धर्म को राज्य धर्म घोषित कर दिया गया। श्रीनगर के कुंडलवन विहार में प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान वसुमित्र की अध्यक्षता में चौथे बौद्ध महासम्मेलन का आयोजन भी किया गया। चीनी यात्री और लेखक ह्वेन त्सांग भी कहते है कि 'उस युग अर्थात् राजा कनिष्क के युग में कश्मीर में वसुमित्र समेत 500 बौद्ध विद्वान थे।' कहने का तात्पर्य यह है विभिन्न मतों और उद्धरणों के साक्ष्यों से यह सिद्ध हो जाता है कि कश्मीर बौध-धर्म का एक गढ़ रहा है। किसी भी धर्म या दर्शन का प्रभाव निश्चित रूप से समाज में प्रतिध्वनित हो जाता है। यही स्थिति कश्मीर की सामाजिकता की भी रही है।

कल्हण के समय में, और उससे पहले, ज़ाहिर तौर पर कश्मीर में "हिंदुओं" और बौद्धों के बीच कोई अंतर नहीं था। कल्हण ने स्वयं बौद्ध शब्दों और भावों का प्रयोग बौद्धों की भाँति किया। नीलमात पुराण नील नाग के उपासकों का ग्रंथ था; कश्मीर में नाग पूजा आम थी। इस ग्रन्थ के आधार पर यदि देखा जाए तो कश्मीर में बौद्ध पूजा के प्रचलन का उल्लेख मिलता है। कनिष्क के शासनकाल उपरान्त भी कुछ समय तक कश्मीर में बौद्ध-धर्म का बोलबाला रहा, परन्तु जैसे अन्य स्थानों पर बौद्ध-धर्म कमज़ोर होता चला गया वैसा ही कश्मीर में भी हुआ। कश्मीर के परिप्रेक्ष्य में विशेष बात यह थी कि बौद्ध-धर्म का पतन भले ही हो गया हो, लेकिन कश्मीरी जनमानस पर महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का प्रभाव बहुत समय तक रहा। कश्मीर में विकसित हुए शैव मत हो या सूफी पंथ, दोनों ही इससे अछूते नहीं रहे।

'कश्मीरनामा' के लेखक अशोक कुमार पांडेय लिखते हैं- 'कश्मीर में आठवीं-नौवीं शताब्दी में अपने तरह का शैव दर्शन विकसित हुआ। यह दर्शन विभिन्न अद्वैत और तांत्रिक धार्मिक परम्पराओं का एक समुच्चय है। वसुगुप्त की सूक्तियों का संकलन 'स्पन्दकारिका' इसका पहला प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है। वसुगुप्त के बाद उनके दो शिष्यों, कल्लट तथा सोमानंद ने इस दर्शन को मज़बूत वैचारिक आधार दिया।' अभिनव गुप्त की पुस्तक 'तन्त्रलोक' एकेश्वरवादी दर्शन की एनसाइक्लोपीडिया मानी जाती है। उनके शिष्य क्षेमेन्द्र ने अपने गुरु के काम को आगे बढ़ाते हुए अपनी पुस्तक "प्रत्याभिज्ञान हृदय' में अद्वैत शैव परम्परा के ग्रंथों का सहज विश्लेषण प्रस्तुत किया। इस दर्शन ने कश्मीर जनजीवन पर ही नहीं अपितु पूरे दक्षिण एशिया की शैव परम्परा पर गहरा प्रभाव डाला। नौवीं से बारहवीं सदी के बीच बौद्ध धर्म का प्रभाव क्षीण होता गया और शैव-दर्शन कश्मीर का सबसे प्रभावी दर्शन बन गया।

हिन्दू बहुल कश्मीर बुद्धिज़्म से इस कारण विशेष रूप से प्रभावित हुआ क्योंकि हिन्दू-धर्म की चार वर्ण व्यवस्थाएं हैं। प्राचीन कश्मीर में जब बुद्धिज़्म फैला तब लाखों हिन्दुओं ने इन्हीं चार वर्ण व्यवस्थाओं के विरुद्ध बुद्ध धर्म अपनाया, जिसके चलते लद्दाख का क्षेत्र बुद्धिज़्म का प्रमुख केंद्र बना। कश्मीर की राजनैतिक व्यवस्था लगभग प्रत्येक युग में असमंजस में ही रही लेकिन कश्मीर की सामाजिक व्यवस्था पूरी तरह से शोषण, असमानता, अत्याचारी प्रवृति की थी जिसके चलते वर्चस्ववादी जातियां सदैव कमज़ोर जातियों पर अपना वर्चस्व स्थापित करती रहीं। जन-सामान्य पर शोषण, अत्याचार की दोधारी तलवार चल रही थी। जनता त्रस्त थी, वे समता, समानता एवं सम्मानता के जिज्ञासु थे। वे शांति से अपना जीवन यापन करना

चाहते थे और अपने आराध्य को पूजना चाहते थे। उनकी यह कामना बौद्ध धर्म को स्वीकार करने पर पूर्ण हुई।

महानिर्वाण के परिणामस्वरूप विचार के कई विद्यालय उत्पन्न हुए। सभी प्रोफेसर बौद्ध थे जो मानते थे कि 'मोक्ष' या पीड़ा से मुक्ति जीवन का अंतिम लक्ष्य है। बौद्ध धर्म के विचार के कई स्कूल "विनय" और "अभिधर्म," धर्म के मूलभूत ग्रंथों की अलग-अलग व्याख्याओं द्वारा आकार लिए हुए थे। 'सर्वास्तिवाद को सबसे पुरानी और सबसे सम्मानित बौद्ध शिक्षाओं में से एक कहा जाता है। प्रसिद्ध तिब्बती विद्वान राहुल भद्र को इस विचारधारा के संस्थापक के रूप में श्रेय दिया जाता है।'

वर्तमान कश्मीर के अधिकांश लोग इस्लाम धर्म का पालन करते हैं। वास्तव में कश्मीर घाटी हिन्दू-धर्म, शैव-मत तथा इस्लाम की सांझी संस्कृति की संवाहक रही है। कश्मीर को पुरातन काल में ऋषिभूमि या शारदा पीठ भी कहा जाता था। यह सूफियों और संतों का प्रदेश है। यहाँ आज भी बौद्ध-धर्म के मठों तथा स्तूपों को देखा जा सकता है।

सम्पादक

डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट

श्रीनगर, जम्मू व कश्मीर

वैचारिक खंड

समाज सुधारक थे डॉक्टर राम मनोहर लोहिया

-अंकुर सिंह

23 मार्च, 1910 को डॉक्टर राम मनोहर लोहिया जी का जन्म अकबरपुर, फैजाबाद (उ. प्र.) जिले में हरिलाल एवं चंदा देवी के घर हुआ था और मृत्यु 12 अक्टूबर 1967 को नई दिल्ली के एक अस्पताल में हुआ था। जिसके बाद दिल्ली के उस हॉस्पिटल का नाम डॉक्टर राम मनोहर लोहिया हॉस्पिटल कर दिया गया।

डॉक्टर राम मनोहर लोहिया के पिता हरिलाल जी गांधी जी के परम भक्त थे और अपने साथ राममनोहर को भी गांधीवादी सभाओं में ले जाते थे। बचपन में ही लोहिया जी गांधी जी के विचारों से काफी प्रभावित होकर आजीवन गांधी जी के विचारधारा पर चलने का प्रण ले लिए।

1921 में डॉक्टर लोहिया पंडित नेहरू के संपर्क में आए और कुछ वर्षों तक उनके साथ कार्य किय। परन्तु, उन दोनों के बीच विभिन्न मुद्दों और सिद्धांतों को लेकर अक्सर आपसी टकराव और मतभेद दिखाई पड़ते थे। नेहरू जी के खर्चों के विरोध पर लोहिया जी का नारा **एक आना बनाम तीन आना** खूब प्रचलित था उस समय।

लोहिया जी स्वतंत्रता सेनानी और राजनेता के साथ-साथ समाज सुधारक भी थे। उन्होंने नारी कल्याण के लिए और जातिवाद को समाज से दूर करने के लिए अनेक सामाजिक कार्यक्रम किए। अक्सर, अपने चुनावी और सामाजिक कार्यक्रमों में अपने सुनने वालों से सभा में हाथ उठावा कर कसम दिलाते थे कि कभी किसी नारी पर हाथ नहीं उठाओगे। **इस पर एक मजेदार किस्सा भी है,** एक बार एक लोहियावादी लोहिया जी के सभा से देर रात अपने घर पहुंचा और उसके घर पहुंचते ही उसकी पत्नी ने देर से आने के वजह से उसको काफी भला-बुरा कहा और बातों ही बातों में लोहिया जी की भी आलोचना करने लगी। काफी देर तक वह व्यक्ति सुनता रहा फिर अपने पत्नी से बोला- "आज, मेरे सामने तुम जो इतना बोल पा रही हो उसके पीछे भी लोहिया जी हैं क्योंकि उनके सभा में मैंने कसम खाई है कि किसी

भी महिला पर हाथ नहीं उठाऊंगा।" इतना सुनते ही उस व्यक्ति की पत्नी चुप हो गई और अपने कहे शब्दों पर बहुत पछताई। आज के परिवेश में सभी राजनीतिक दल नारी उत्थान की बात तो करते है लेकिन उनके दल में कई ऐसे नेता मिल जायेंगे जो नारी शोषण के मामले में अभियुक्त है फिर भी राजनीतिक दल ने उन्हें पार्टी में उच्च पद देने के साथ-साथ चुनाव लड़ने के लिए पार्टी का सिंबल पकड़ा देती है।

जातिवाद को समाज से दूर करने के उपाय पर लोहिया जी कहते थे कि अलग-अलग जातियों में रोटी और बेटी का रिश्ता होना चाहिए। अर्थात, विभिन्न जातियों में आपसी खान पान के साथ सामाजिक रिश्ते भी होना चाहिए जिससे उनके मन से आपसी भेदभाव और असमानता की भावना समाप्त हो सकें। **वर्तमान परिस्थिति में, देश आजादी के इतने वर्षों बाद भी जातिवाद का दंश झेल रहा है जिसे लोहिया जी के रोटी और बेटी के रिश्ते वाले फॉर्मूले से काफी हद्द तक समाप्त किया जा सकता है।** आजकल, एक तरफ जहां राजनीतिक दल (पार्टी) जनता के सामने देश से जातिवाद को दूर करने का दिखावा तो करती है वही दूसरी तरफ वोटों के लिए उम्मीदवारों के चयन में उनके जाति को प्राथमिकता देती है। देश के लगभग सभी चुनावों में जाति और धर्म के नाम पर वोटो का ध्रुवीकरण काफी जोरो से होता है।

लोहिया जी के अनुयायियों से यही कहना चाहूंगा कि लोहिया जी के आदर्शों पर चलने से देश की कई समस्याएं स्वतः समाप्त हो जाएँगी जो कि लोहिया जी के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

अंकुर सिंह

हरदासीपुर, चंदवक, जौनपुर

उत्तर प्रदेश- 222129

ई मेल- ankur3ab@gmail.com

इतिहास/विरासत खंड

हज़रत अमीर ख़ुसरो के दोसुख़ने और हरियाणवी लोक संस्कृति

-सीताराम गुप्ता

हज़रत अमीर ख़ुसरो देहलवी खड़ी बोली, हिंदवी अथवा हिंदी भाषा के पहले कवि माने जाते हैं। हिंदीवाले उन्हें हिंदी का कवि मानते हैं तो उर्दूवाले उर्दू का। बहरहाल वे एक अत्यंत लोकप्रिय कवि हैं। उनकी दोसुख़ना नामक काव्य शैली अथवा विधा में कुछ रचनाएँ मिलती हैं, जो न केवल रोचक हैं अपितु, अद्वितीय भी हैं। इनसे पता चलता है कि अमीर ख़ुसरो न केवल हिंदी के कवि हैं, अपितु हिंदी की अनेक बोलियों, जिनमें हरियाणवी भी है, के अच्छे जानकार हैं। इसके लिए पहले उनके कुछ दोसुख़ने देखने और समझने का प्रयास करते हैं:

राजा प्यासा क्यों? गधा उदासा क्यों?

'लोटा' न था।

यहाँ दोनों समस्याओं अथवा पहेलियों का उत्तर है 'लोटा' न था। 'लोटा' नामक बर्तन न होने की वजह से राजा पानी न पी सका और प्यासा ही रह गया। गधे की उदासी का कारण भी था, उसका रेत में लोट न मार सकना। गधा जब तक रेत में लोट न लगा ले उसे मज़ा नहीं आता। क्योंकि गधा रेत में नहीं लोटा था इसलिए उदास था।

समोसा क्यों न खाया? जूता क्यों न पहना?

'तला' न था।

यहाँ पर भी दोनों समस्याओं अथवा पहेलियों का उत्तर है 'तला' न था। 'तला' न जाने की वजह से समोसा कच्चा था, अतः खाया नहीं जा सकता था और जूते में 'तला' अर्थात् सोल टूट जाने अथवा न होने की वजह से पहना नहीं जा सकता था।

अमीर ख़ुसरो की पहेलियाँ हों, मुकरियाँ हों अथवा दोसुख़ने हों सभी अत्यंत लोकप्रिय हैं और इसका कारण है इनमें लोक तत्त्व और लोक संस्कृति का विद्यमान

होना। अब हम उस दोसुखने की बात करते हैं, जिससे अमीर ख़ुसरो के हरियाणवी लोक संस्कृति के ज्ञान का पता चलता है। दोसुख़ना देखिए:

खिचड़ी क्यों न पकाई? कबूतरी क्यों न उड़ाई?

'छड़ी' न थी।

एक जगह इस दोसुखने के उत्तर का स्पष्टीकरण कुछ इस तरह से दिया गया था। खिचड़ी इसलिए नहीं पकाई कि 'छड़ी' अर्थात् खिचड़ी चलाने के लिए कोई डंडी जैसी चीज़ नहीं थी और कबूतरी इसलिए नहीं उड़ाई कि 'छड़ी' अर्थात् डंडी नहीं थी। यदि यहाँ खिचड़ी के संदर्भ में 'छड़ी' का अर्थ डंडी लगाया जाता है, तो इस दोसुख़ने का सारा सौंदर्य नष्ट हो जाता है। यहाँ इस दोसुख़ने का अर्थ समझने के लिए हरियाणा व आसपास के क्षेत्रों की लोक संस्कृति का ज्ञान होना अनिवार्य है। खिचड़ी के संदर्भ में 'छड़ना' एक विशेष एवं महत्त्वपूर्ण क्रिया है। यहाँ दाल-चावल नहीं बाजरे की खिचड़ी की बात हो रही है। वैसे भी खिचड़ी या अन्य किसी चीज़ को पकाते समय चलाने के लिए किसी 'छड़ी' अर्थात् डंडी जैसी चीज़ की नहीं अपितु डोई अथवा कड़छी जैसी चीज़ अथवा साधन की आवश्यकता होती है।

बाजरे की खिचड़ी बनाने के लिए पहले बाजरे की राळी अथवा छिलका उतारकर उसे कूटा जाता है। इसके लिए पहले बाजरे को हलका-सा भिगोकर कुछ देर के लिए रख दिया जाता है और फिर ओखली में डालकर मूसल से हलकी-हलकी चोटें मारकर निकाल लिया जाता है और उसे पिछोड़कर साफ कर लिया जाता है। इसी क्रिया को छड़ना कहा जाता है। छड़ने से बाजरे की राळी अथवा छिलका उतर जाता है। पिछोड़कर साफ करने के बाद बाजरे को एक बार फिर कूटा जाता है और फिर खिचड़ी पकने के लिए रख दी जाती है। यदि खिचड़ी बनाने से पहले बाजरे को छड़ने की क्रिया नहीं की जाती, तो वह खिचड़ी गले में लगती है और उसे हलक़ से नीचे

उतारने में परेशानी होती है। इस अनुभव के अभाव में इस रचना को समझना असंभव है।

यहाँ वास्तव में खिचड़ी इसलिए नहीं पकाई गई, क्योंकि उसे छड़ा नहीं गया था और छड़ने में काफी समय लगता है। बाजरे की खिचड़ी प्रायः शाम को बनाई जाती है, जिसकी तैयारी दोपहर बाद से ही शुरू हो जाती है। बाजरे की खिचड़ी जल्दबाज़ी में बनाने पर ठीक से उसकी राळी नहीं उतर पाती है, जिससे वो स्वादिष्ट नहीं बन पाती। प्रश्न उठता है कि ये दोसुख़ना है क्या? यह पहेली से मिलती-जुलती एक रचना है, जिसमें दो अलग-अलग पहेलियाँ दी होती हैं लेकिन दोनों पहेलियों का उत्तर एक ही होता है। इसका सीधा सा अर्थ है कि उत्तर में जो शब्द आएगा वह द्विअर्थी या अनेकार्थी ही होगा। इसमें एक चीज़ और है और वो ये कि लेखन के स्तर पर भी वह शब्द एक ही होगा अर्थात् उसकी दो वर्तनियाँ नहीं हो सकतीं। वह श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द नहीं हो सकता। अमीर ख़ुसरो का एक और दोसुख़ना देखिए जिससे पता चलता है कि वे उर्दू के नहीं हिंदी के रचनाकार हैं। दोसुखना इस प्रकार से है:

अनार क्यों न चखा? वज़ीर क्यों न रखा?

'दाना' न था।

'दाना' शब्द के दो अर्थ हैं एक है बीज और दूसरा है बुद्धिमान, जिसका विपरीतार्थक नादान होता है। अनार में दाना अर्थात् बीज नहीं था इसलिए नहीं चखा या खाया और व्यक्ति बुद्धिमान नहीं था, इसलिए उसे वज़ीर अथवा मंत्री के तौर पर नहीं रखा।

यदि हम इस दोसुख़ने को हिंदी अर्थात् देवनागरी लिपि में लिखते हैं तो ठीक है, लेकिन यदि हम इसे अरबी-फ़ारसी रस्मुलख़त अर्थात् उर्दू लिपि में लिखते हैं तो ग़लत हो जाता है। कारण उर्दू में दोनों 'दाना' शब्दों की वर्तनियाँ अलग-अलग हैं। पहले 'दाना' (دانہ) में 'ना' नून और हे के संयोग से बनता है, जबकि दूसरे 'दाना' (دانا) में 'ना' नून और अलिफ के मेल से बनता है। उर्दू में दोनों की वर्तनी और एक हद तक

उच्चारण में भी अंतर है। यहाँ अरबी-फ़ारसी रस्मुलख़त अर्थात् उर्दू लिपि में किसी एक वर्तनी के लिख देने से यह दोसुख़ना रह ही नहीं जाता।

इससे यही स्पष्ट होता है कि इसे हिंदी भाषा के लिए प्रयुक्त देवनागरी लिपि में ही सही-सही लिखा जा सकता है, क्योंकि हिंदी में दोनों की वर्तनी और उच्चारण में अंतर दृष्टिगोचर व कर्णगोचर नहीं होता। अहले-उर्दू वर्तनी और उच्चारण के मामले में हिंदी वालों से कहीं अधिक संवेदनशील होते हैं, इसमें संदेह नहीं। इससे पता लगता है कि अमीर ख़ुसरों ने अपने साहित्य को, विशेष रूप से इस रचना को देवनागरी लिपि में ही लिपिबद्ध किया होगा। यद्यपि उर्दूवाले उन्हें उर्दू का रचनाकार मानते हैं और हिन्दीवाले हिंदी का, लेकिन यहाँ अमीर ख़ुसरो न केवल हिंदी के ज़्यादा क़रीब ठहरते हैं, अपितु हरियाणा के लोक जीवन की भी पूरी समझ रखने वाले दिखते हैं।

सीताराम गुप्ता,
ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,
दिल्ली - 110034
मोबा0 नं0 9555622323
email : srgupta54@yahoo.co.in

बदलता कश्मीर

जी-20 की अध्यक्षता से जम्मू-कश्मीर का विश्व को सन्देश

-विवेक मिश्र

16 नवम्बर 2022 को जी 20 बाली शिखर सम्मलेन में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को भारत जी 20 की अध्यक्षता सौपी गई। जिसका कार्यकाल 1 दिसंबर 2022 से 30 नवम्बर 2023 तक रहेगा। इसकी थीम- वसुधैव कुटंबकम अर्थात एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य! जो महोपनिषद के अध्याय 6 में उल्लिखित है, से सन्दर्भित है।

मई माह के 'अवाम की आवाज़' रेडियो कार्यक्रम में जम्मू-कश्मीर के उप राज्यपाल श्री मनोज सिन्हा ने कहा- "इस अमृत काल में एक नया, आत्मनिर्भर जम्मू-कश्मीर बनाने का हमारा संकल्प है। जी-20 बैठक का यह ऐतिहासिक अवसर जम्मू-कश्मीर की पीढ़ियों को प्रेरित करेगा और समाज में नए उत्साह, नए आत्मविश्वास को बढ़ाएगा।[1]

इस मेजबानी से जम्मू-कश्मीर की पर्यटन क्षमता, एडवेंचर टूरिज़्म, फ़िल्म उद्योग, कृषि को बढ़ावा एवं यहाँ के युवाओं के लिए रोजगार के अनेक अवसर खुलेंगे।

प्रस्तावना-

भारत जी-20 की अध्यक्षता देश के लिए अपनी उपलब्धियों, चुनौतियों और आकांक्षाओं को दुनिया के सामने प्रदर्शित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। भारत जिन पहलुओं पर सर्वाधिक प्रकाश डालना चाहता है उनमें से एक जम्मू-कश्मीर की स्थिति है, जो दशकों से भारत और पाकिस्तान के बीच एक विवादास्पद मुद्दा रहा है। भारत ने अपनी संप्रभुता पर जोर देने और क्षेत्र में विकास और शांति पहल के लिए अंतरराष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करने के एक तरीके के रूप में, जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में जी-20 के बैठकें आयोजित की। 5 अगस्त 2019 को जम्मू-

कश्मीर राज्य के विशेष प्रावधान अनुच्छेद 370 को निरस्त कर राज्य को दो केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित कर दिया गया,जो क्रमशः जम्मू-कश्मीर और लद्दाख हैं।

जम्मू-कश्मीर में जी-20 बैठकें आयोजित करके भारत ने दुनिया को यह सन्देश दे दिया है कि दशकों से अशांत क्षेत्र अब सामान्य स्थिति में वापस आकर ख़ुशहाली की राह पर अग्रसर है। भारत को उम्मीद है कि जी-20 कार्यक्रम इस क्षेत्र में सकारात्मक ध्यान आकृष्ट करने एवं विदेशी निवेश लाने का सुवसर है। साथ ही इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक सुंदरता को वैश्विक पटल पर प्रदर्शित करने का यह महत्वपूर्ण मंच है।

• निवेश के अवसर-

जी-20 शिखर सम्मेलन में विश्व के प्रमुख निवेशकों सहित सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के प्रमुख एकत्र होते हैं। शिखर सम्मेलन के दौरान विश्व की नजरें जम्मू-कश्मीर पर हैं।इसी कारण क्षेत्र में व्यापार के अवसर तलाशने में रुचि रखने वाले संभावित निवेशकों को आकर्षित करना लाजमी है।

विश्व व्यापार पर्यटन परिषद के अनुसार, भारत के सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन उद्योग का योगदान साल 2029 तक 460 बिलियन अमरीकी डालर होने की उम्मीद है। जम्मू-कश्मीर प्राकृतिक सुंदरता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत इसे एक आकर्षक पर्यटन स्थल बनाती हैं एवं शिखर सम्मलेन इसे बढ़ावा देने का सही अवसर प्रदान करता है।[2]

• व्यापार और वाणिज्य-

जी-20 शिखर सम्मेलन अंतरराष्ट्रीय व्यापार नीतियों पर संवाद का अवसर उपलब्ध करवाता है, जिससे अप्रत्यक्ष रूप से जम्मू-कश्मीर को लाभ होगा। जम्मू कश्मीर पर्यटन सचिव श्री अरविंद सिंह ने कहा कि 22 और 23 मई को 'आर्थिक विकास और सांस्कृतिक संरक्षण के लिए फिल्म पर्यटन' पर साइड इवेंट का आयोजन

किया जाएगा। मई 2023, फिल्म पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।साथ ही उन्होंने कहा पर्यटन स्थलों को बढ़ावा देने में फिल्मों की भूमिका का दोहन करने के लिए एक रोडमैप प्रदान करने के लिए 'फिल्म पर्यटन पर राष्ट्रीय रणनीति' का मसौदा तैयार किया जाएगा।[3]

• पर्यटन को बढ़ावा-

जम्मू-कश्मीर अपनी समृद्ध प्राकृतिक सुंदरता एवं सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है, जो इसे पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनाता है। जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय माध्यम जम्मू-कश्मीर को सुर्खियों में लाने में महती भूमिका अदा करेगा।

इस अंतराष्ट्रीय सम्मेलन से वैश्विक जागरूकता बढ़ाने और क्षेत्र के पर्यटन उद्योग पर एक नया दृष्टिकोण प्रदान करने की उम्मीद है। जम्मू-कश्मीर की अर्थव्यवस्था पर्यटन पर बहुत अधिक निर्भर है।इस शिखर सम्मलेन से इस वर्ष आगंतुकों की रिकॉर्ड संख्या का अनुमान है।[4] पर्यटन बढ़ने से स्थानीय व्यवसायों में बढ़ोत्तरी, रोजगार सृजन एवं समग्र आर्थिक विकास में वृद्धि होगी।

• अंतर्राष्ट्रीय पटल पर ध्यान आकृष्ट-

जी-20 शिखर सम्मेलन दुनिया भर के राष्ट्राध्यक्षों और मीडिया समूहों का ध्यान आकर्षित करता है। यह जम्मू-कश्मीर को अपनी प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विरासत और पर्यटन क्षमता को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करता है।

उप-राज्यपाल श्री मनोज सिन्हा ने इस वैश्विक आयोजन के संदर्भ में अपनी बात रखते हुए कहा कि 27 देशों के 57 प्रतिनिधि श्रीनगर में जी-20 बैठक में भाग ले रहे हैं और यह भारत की ताकत और वसुधैव कुटुंबकम के हमारे प्राचीन मूल्यों का

प्रतिबिम्ब है।[5] पर्यटन कार्य समूह की तीसरी बैठक से ज्ञात होता है कि जम्मू कश्मीर किसी भी अंतराष्ट्रीय कार्यक्रम की मेजबानी करने में सक्षम है।

कश्मीर चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (KCCI) ने ठीक ही कहा है कि यह घटना "क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को भारी बढ़ावा देगा।" विशेष रूप से, जी 20 कश्मीर शिखर सम्मेलन भारतीय अर्थव्यवस्था के बारे में आईएमएफ की तेजी को बढ़ाएगा।[6] बढ़ी हुई दृश्यता वैश्विक पर्यटकों के बीच जिज्ञासा और रुचि पैदा करेगी।

• व्यापार के अवसर-

जी-20 शिखर सम्मेलन में हाई-प्रोफाइल अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों की उपस्थिति संभावित निवेशकों और पर्यटन हितधारकों का ध्यान आकर्षित कर सकती है। घाटी में विदेशी निवेश की वापसी भी क्षेत्र में शांति सुनिश्चित करने में स्थानीय प्रशासन की सफलता का एक विश्वसनीय उपाय है, जो पर्यटकों की सुरक्षा के लिए एक अपरिहार्य शर्त है। मार्च 2023 में, कश्मीर में 500 करोड़ रुपये का पहला प्रत्यक्ष विदेशी निवेश देखा गया, जिसमें दुबई स्थित एम्मार उद्यम ने एक शॉपिंग और कार्यालय परिसर का निर्माण शुरू किया। इसके अलावा, यूनेस्को के उत्कट समर्थन के साथ, प्रशासन ने राष्ट्रीय स्मार्ट सिटी मिशन के तहत 30 बिलियन रुपये निर्धारित करते हुए श्रीनगर जिले का कायाकल्प शुरू किया, जिसे 2023 में समयबद्ध पूरा किया जाएगा।[7]

• फ़िल्म पर्यटन-

जम्मू कश्मीर सरकार फिल्म नीति 2021 के अंतर्गत फिल्म निर्माण को बढ़ावा देने एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बुनियादी ढांचा तैयार करने में सफल रही। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में सचिव अपूर्व चंद्रा जी-20 की बैठक में कहा- "कश्मीर में बीते कुछ समय के दौरान 404 फिल्मों, टीवी सीरियस और विज्ञापनो की शूटिंग की अनुमति दी गई है। फिल्म पर्यटन में आप कश्मीर की उपेक्षा नहीं कर सकते। हमने एक

प्रो-एक्टिव इकोसिस्टम फिल्म पर्यटन व शूटिंग के लिए विकसित किया है। हम फिल्मों को सहायता प्रदान करने साथ-साथ अंतराष्ट्रीय फिल्म यूनिटों के लिए वीजा सम्बन्धी औपचारिकताओं में भी सहयोग करते हैं।"[8]

राजनयिक जुड़ाव-

जम्मू और कश्मीर में जी-20 शिखर सम्मेलन आयोजित करना एक साहसिक और महत्वाकांक्षी कदम होगा, जम्मू और कश्मीर को उच्चतम स्तर पर पहचानने का अवसर, कई राज्यों के प्रतिनिधिमंडलों ने पिछले बीस वर्षों में नियमित रूप से जम्मू-कश्मीर का दौरा किया है। इस सूची में अमेरिकी विशेष राजदूत रॉबर्ट ब्लैकविल भी शामिल हैं, जो श्रीनगर के साथ-साथ सियाचिन ग्लेशियर दोनों के लिए एक रणनीतिक और परिचालन मार्ग बनाने का नेतृत्व कर रहे थे।[9]

- **बहुपक्षीय समर्थन-**

जी-20 शिखर सम्मेलन वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद और जनसंख्या के एक महत्वपूर्ण हिस्से का प्रतिनिधित्व करने वाले देशों को एकत्र करता है। इन देशों में जम्मू-कश्मीर जैसी चुनौतियों का सामना करने वाले क्षेत्रों पर प्रभाव डालने और राजनयिक समर्थन प्रदान करने की क्षमता है। द्विपक्षीय और बहुपक्षीय जुड़ाव से शांतिपूर्ण समाधानों की वकालत अधिक मानवीय सहायता और क्षेत्र में विकास पहलों के लिए समर्थन बढ़ने के आसार बनेगें।

श्रीनगर में एक होटल व्यवसायी मुख्तार अहमद ने कहा-

“एंटायर वैली भव्य G-20 इवेंट के लिए उत्साहित है। यह पहली बार है जब कश्मीर में ऐसा भव्य आयोजन हो रहा है। इससे पहले, इस स्वर्ग में ऐसा कोई आयोजन नहीं हुआ। हमारे हस्तशिल्प और पर्यटन स्थलों को वैश्विक मंच पर उजागर किया जाएगा।”[10]

• ट्रेवल एडवाइजरी ख़त्म होने की उम्मीद -

1990 के दशक में जम्मू कश्मीर आंतक के साए से जूझ रहा रहा था। इसी कारण अमेरिका, इंग्लैंड सहित यूरोपीय देशों ने कश्मीर के लिए एक एडवाइजरी जारी की, जिसमें वहाँ के नागरिकों को कश्मीर जाने पर रोंक लगा दी गई। जिससे कश्मीर के पर्यटन पर बहुत नकारात्मक असर हुआ। अब अनुच्छेद 370 के पश्चात कश्मीर के हालातों पर अमूलचूल परिवर्तन आया है। आतंक और अलगाववाद अब गुजरे ज़माने की बात हो गई। यह जी-20 की बैठक में विदेशी मेहमानों ने प्रत्यक्ष रूप से देखा।

हाल ही में जम्मू-कश्मीर के उप राज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा था कि "उन्हें विश्वास है कि यूरोपीय राष्ट्र और संयुक्त राज्य अमेरिका जल्द ही इस क्षेत्र के खिलाफ जारी ट्रेवल एडवाइजरी ख़त्म करेगा।"[11]

वैश्विक आयोजन के आगामी परिणाम-

मई माह के अंतिम सप्ताह में श्रीनगर में आयोजित जी-20 की बैठक से जम्मू कश्मीर की वैश्विक पहचान बन गई है। यही कारण है कि बैठक हुए दो महीने भी नहीं हुए उसके सुखद परिणाम आने प्रारम्भ हो गए हैं।

जम्मू-कश्मीर पर्यटन सचिव सैयद आबिद रशीद ने कहा कि जी-20 शिखर सम्मेलन आयोजित करना जम्मू और कश्मीर के पर्यटन क्षेत्र के लिए एक अविस्मरणीय क्षण था। हम अब इसके सकारात्मक परिणाम देख रहे हैं, वह आगे कहते हैं कि “हमें उन देशों से बहुत पूछताछ और बुकिंग मिल रही है जो जी 20 शिखर सम्मेलन में नहीं आए थे।"[12] हमें विश्वास है कि आने वाले समय में, हम जम्मू और कश्मीर को एक वैश्विक गंतव्य के रूप में प्रस्तुत करने में सक्षम होंगे।

कश्मीर का खूबसूरत नजारा देखकर ही शायद जहांगीर ने फ़ारसी में कहा था कि ‘गर फिरदौस बर रुए ज़मीं अस्त; हमीं अस्तो, हमीं अस्तो, हमीं अस्त’ अर्थात्

अगर पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं पर है और सिर्फ यहीं पर है। यही कारण है कि पिछले वर्ष 10 लाख से अधिक पर्यटकों ने कश्मीर की वादियों का दीदार किया। यही कारण है कि 71 वीं मिस वर्ल्ड 2023 प्रेस कॉन्फ्रेंस कश्मीर में आयोजित की गई। इसमें मिस वर्ल्ड आर्गेनाइजेशन की चेयरपर्सन जूलिया मॉर्ले ने घोषणा की कि भारत नवंबर से दिसंबर तक वार्षिक अंतरराष्ट्रीय सौंदर्य प्रतियोगिता के लिए कार्यक्रमों की एक महीने की श्रृंखला की मेजबानी करेगा। उन्होंने कहा उम्मीद है कि कार्यक्रम का एक हिस्सा कश्मीर में आयोजित किया जाएगा। श्रीनगर के दौरे के दौरान मॉर्ले ने पत्रकारों से कहा, "यह पर्यटन के लिए एक शानदार स्थान है। सच कहूं तो मैं बहुत खुश हूँ।हमारे लिए यह भावनात्मक है, ऐसी सुंदरता को देखने के लिए..."[13]

निष्कर्ष-

जम्मू-कश्मीर में जी-20 शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ।जिसका उद्देश्य पर्यटन के क्षेत्र में क्षेत्र की क्षमता और अवसरों को प्रदर्शित करना था। साथ ही विभिन्न मुद्दों पर वैश्विक सहयोग और एकजुटता को बढ़ावा देना था। इस सम्मलेन से जम्मू-कश्मीर को वैश्विक मान्यता मिली।

जी-20 सदस्य देशों के 60 से अधिक प्रतिनिधियों का ध्यान कश्मीर ने आकर्षित किया।साथ ही विश्व ने देखा कि भारत जम्मू-कश्मीर में अर्थव्यवस्था और विकास के नए आयाम तय कर रहा है, जिससे वहाँ के स्थानीय निवासियों के लिए रोजगार, आय और कौशल विकास जैसे आर्थिक अवसर पैदा हो रहे हैं और सरकार यह भी सुनिश्चित कर रही है कि पर्यटन राजस्व भी बढ़े। (15) क्षेत्र की कनेक्टिविटी और पहुंच में सुधार के लिए कई सार्वजनिक-निजी भागीदारी भी शामिल कर रहे हैं, जिससे सड़कें, पुल, हवाई अड्डे का निर्माण किया जा सके।[16]

स्थायी पर्यटन प्रथाओं को बढ़ावा दिया जा रहा है, जो पर्यावरण को संरक्षित करते हैं और स्थानीय समुदायों को लाभ पहुंचाते हैं, जैसे प्राकृतिक संसाधनों

की खपत को कम करना, पारिस्थितिक तंत्र के क्षरण को रोकना, जानवरों को नुकसान पहुंचाने या शोषण करने वाली गतिविधियों से बचना, संरक्षण प्रयासों का समर्थन करना, अपशिष्ट और प्रदूषण को कम करना, रीसाइक्लिंग को बढ़ावा देना और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत इत्यादि।

स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक विविधता और पहचान के संरक्षण प्रदान किया जा रहा है जिसमें वहाँ की परंपराओं, भाषाओं, कलाओं और शिल्पों को संरक्षित किया जाना शामिल है। जी-20 देशों के सदस्यों ने स्थानीय कलाकारों, संगीतकारों, लेखकों के मध्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान की संस्कृति विकसित की, साथ ही उन्हें पूर्ण सहयोग देने की पेशकश भी की। जलवायु परिवर्तन, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार और सुरक्षा जैसे वैश्विक मुद्दों पर एक साथ काम करने के लिए जी-20 देशों ने प्रतिबद्धता व्यक्त की।[17]

भारत जी-20 प्रेसीडेंसी के हिस्से के रूप में, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) अग्रणी है। जी-20 डिजिटल इकोनॉमी वर्किंग ग्रुप (DEWG), जिसने डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर, डिजिटल अर्थव्यवस्था में सुरक्षा और डिजिटल कौशल जैसे तीन प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान की है।[18]

इसी के अंतर्गत जी-20 की बैठक में डिजिटल जम्मू-कश्मीर की तस्वीर पेश की गई।जिसमें अनुच्छेद 370 निरस्त होने के पश्चात आई शांति और सम्पन्नता से विदेशी मेहमानों को रूबरू करवाया गया। इन बदलावों से चीन और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों द्वारा फैलाए जा रहे दुष्प्रचारों को भी ख़ारिज किया गया।

जम्मू-कश्मीर में चल रही 400 से अधिक डिजिटल सरकारी योजनाओं से विदेशी मेहमानों को अवगत कराया गया। जिसमें समय-समय पर नागरिकों से ऑनलाइन माध्यम से सुझाव भी लिए जा रहे हैं, जिससे नागरिक और प्रशासन के मध्य परस्पर सम्बन्ध स्थापित हो रहे हैं।

सन्दर्भ सूची -

1. G20 Historic Opportunity To Showcase J-K's Culture, Heritage, Tourism: LG Sinha, Outlook, May21, 2023

2. Dr. Shenaz Ganai, "G20 igniting socio-economic growth in Kashmir: A thriving South Asia beckons", ANI, may 9, 2023

3. Third G20 Tourism meeting to be organized from 22nd to 24th May at Shrinagar, PIB Delhi, May 19, 2023

4. Fareha Naaz, "Kashmir gears up for G20 summit with heightened security, development initiatives", Mint, May16, 2023

5. "पीएम के मार्गदर्शन में जम्मू-कश्मीर शांति और संवृद्धि की राह पर", अमर उजाला, 24 मई 2023 (जम्मू-कश्मीर संस्करण)

6. SAJID YOUSUF SHAH, "India's G20 Summit in Kashmir Is a Big Deal", May05, 2023, Fair Observer

7. AYJAZ WANI, "G20 in Srinagar: Showcasing the return of peace and Kashmir's global tourism potential", May22, 2023, orfonline.com

8. नवीन नवाज, "कश्मीर में फिल्म पर्यटन पर विदेशी निवेश पर खुल रही राह", दैनिक जागरण, 24 मई 2023 (जम्मू संस्करण)

9. Anamitra Banerjee, "Kashmir and India's G20 Presidency",JK Policy Institute, April, 4, 2023

10. 'G20 meeting set to herald all-round development in Jammu and Kashmir', Greater Kashmir, May14, 2023

11. Mir Ehsan, Srinagar, "Hopeful of more foreign tourists visit to Kashmir", Aug 29, 2023, Hindustan Times

12. Zulfikar Majid, "After G20 summit, Kashmir sees increase in foreign tourists", July 22, 2023, Deccan herald

13. "कश्मीर में मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता के आयोजन की योजना", 30 अगस्त 2023, DW

14. "Kashmir All Set To Host This Year's Miss World Pageant", August 28, 2023

15. Cherylann Mollan & Sharanya Hrishikesh, "G20: India hosts tourism meet in Kashmir amid tight security", May22, 2023, BBC News

16. Devika Bhattacharya, "How the G20 meet in Kashmir is more than a summit, it's rejuvenation", India Today, May23, 2023

17. Moomin Farooq Lone, "G20 Summit: The possible outcomes for Jammu and Kashmir", January 21, 2023, Kashmir Reader

18. PIB Bengaluru, August 16, 202 com

-विवेक मिश्र
शोध अध्येता,
डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
ईमेल- vivekkumarmishra9990@gmail.com

विमर्श खंड

दक्षिण भारत में हिंदी का विकास और अनुवाद

-डॉ. प्रियंका कुमारी

अनुवाद एक महत्वपूर्ण कार्य है जो एक भाषा से दूसरी भाषा में लिखित या मौखिक कार्य (जैसे कि ग्रंथ, कविता, कहानी, नाटक, लेख, आदि) को प्रकाशित करता है। यह कार्य भाषाओं, संस्कृतियों, और समाजों के बीच संवाद को बढ़ावा देता है और साहित्यिक विविधता को प्रदर्शित करता है। अनुवादक के लिए कुशलता, संभावनाशीलता, और साहित्यिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। इसलिए अनुवादक को मूल लेखन के भावनात्मक और साहित्यिक पहलू को समझने और प्रतिस्थापित करने की क्षमता होनी चाहिए। अनुवादक को उन दोनों भाषाओं की अच्छी जानकारी होनी चाहिए जिनमें उन्हें काम करना है। कृष्ण कुमार गोस्वामी के अनुसार, "अनुवाद आज अपने सैद्धांतिक संदर्भ में बहुआयामी और प्रयोजन में बहुमुखी हो गया है, किंतु अनुवाद की सार्थकता और व्यावहारिकता में जो संवर्धन हुआ, उसी अनुपात में उसके सिद्धांतों पर गहराई से चिंतन नहीं हुआ। वास्तव में अनुवाद की परिभाषा, स्वरूप, प्रकृति तथा उसके विवेचन में अनुवादशास्त्री इतने उलझ गए हैं कि वे अनुवाद के दर्शन को पूरी तरह समझ नहीं पाए, क्योंकि अनुवाद में इन सैद्धांतिक संदर्भों के अतिरिक्त व्यवहार के रूप में उसे साधना कोई सरल कार्य नहीं है। सफल अनुवाद का संबंध व्यवहार पक्ष से है और इसीलिए अनुवाद के सिद्धांत और व्यवहार पक्ष के संबंधों पर सार्थक विवेचन करने की आवश्यकता है ताकि अनुवाद प्रक्रिया स्पष्ट हो सके।"[1] अनुवादक को मूल लेखन के अनुसार विशेषण, वाक्य-रचना, और भाषा का समझ होना चाहिए, साथ ही सांविधानिक नियमों का पालन करते हुए अनुवाद करना चाहिए। अनुवादक को अपने काम को बार-बार समीक्षा करना और सुधारने की क्षमता होनी चाहिए ताकि अनुवाद में कोई

त्रुटि न रहे। अनुवादक का काम है मूल लेखक के भाषाई और साहित्यिक शैली को संजीवनीकृत करना और आदर्श रूप से सांविधानिक रूप से उनके पाठकों को संवाद में प्रस्तुत करना। इस रूप में, अनुवादक का कार्य साहित्यिक धरोहर को संरक्षित करता है, विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच संवाद को बढ़ावा देता है, और विश्व साहित्य की अधिक व्यापक पहुंच को समर्थन करता है।

दक्षिणी हिंदी, उत्तर भारतीय हिंदी के विपरीत है और दक्षिण भारतीय उपमहाद्वीप के क्षेत्र में बोली जाती है। इसका उपयोग आमतौर पर आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, और केरल के कुछ क्षेत्रों में किया जाता है। दक्षिणी हिंदी का विकास उस समय से शुरू हुआ जब उर्दू और तेलुगु भाषा के विभिन्न संस्करणों का मिलन हुआ और उन्हें मिश्रण किया गया। इसका प्रभाव भाषाई, सांस्कृतिक, और सामाजिक परिवेश पर पड़ा, और दक्षिणी हिंदी अपने स्थान स्थापित कर पाई। दक्षिणी हिंदी का इतिहास उसके सांस्कृतिक और भाषाई विकास के साथ जुड़ा हुआ है। इसने विभिन्न भाषाओं, विचारधाराओं, और साहित्यिक परंपराओं को जोड़ा है, जिसने इसे एक अद्वितीय भाषाई पहचान प्रदान की है। इस रूप में, दक्षिणी हिंदी का इतिहास उसके विविध सांस्कृतिक विकास को दर्शाता है, जो इसे भारतीय भाषाओं की विविधता का अभिन्न अंग बनाता है।

दक्षिणी हिंदी, जिसे दक्खनी भाषा या दक्खनी हिंदी भी कहा जाता है। यह भाषा भारत के दक्षिणी भागों में बोली जाती है, जैसे कि महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, और तमिलनाडु। दक्षिणी हिंदी का इतिहास उसके भाषाई और सांस्कृतिक परिपेक्ष में समृद्ध और रोमांचक है। यह भाषा मुग़ल साम्राज्य के समय से ही विकसित हुई थी और मुग़ल शासनकाल के दौरान उर्दू के साथ गहरा संबंध बनाया। दक्षिणी हिंदी के विकास में मुग़ल साम्राज्य, आदिवासी संस्कृतियों, हिंदू और मुस्लिम संस्कृतियों, और दक्षिण भारतीय भाषाओं का संगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

दक्षिणी हिंदी के अनुवाद का प्रयोग भारत की अनेक भाषाओं में होता है। इसका उदाहरण, मराठी से हिंदी, हिंदी से तेलुगु, या उर्दू से कन्नड़ आदि में अनुवाद हो सकता है। एन ई विश्वनाथ अय्यर के अनुसार, "हिंदी को स्वाधीनता प्रेम का प्रतीक माना गया था। लोग हिंदी सीखना देशप्रेम का ही एक रूप स्वीकार करते थे। विदेशी भाषा और विदेशी सत्ता से अपने को छुड़ाने की नई चेतना हिंदी प्रचार के दिनों में मुखरित थी। यही कारण है कि बँगला, मराठी, गुजराती आदि अन्य भाषाओं की कृतियाँ धड़ाधड़ हिंदी में अनूदित होती थीं तथा हिंदी से अन्य भाषाओं में रूपांतरित की गई।"[2] अनुवाद का उद्देश्य एक भाषा से दूसरी भाषा में संदेश का ध्यानाकर्षण और समझाना होता है। इसका प्रयोग साहित्य, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और अन्य क्षेत्रों में होता है। दक्षिणी हिंदी के अनुवाद का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है, जैसे कि साहित्य, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वाणिज्य, सरकारी दस्तावेज़, और औद्योगिक क्षेत्र में। यहाँ कुछ उदाहरण हैं जिनमें दक्षिणी हिंदी का अनुवाद किया जा सकता है| 'इस गद्य- ग्रंथ का नाम 'मिराजुल आशिकीन' है, जिसके लेखक ख्वाजा बन्दानवाज़ (1318- 1430) हैं। दक्खिनी के साहित्यकारों में अब्दुल्ला, वजही, निजामी, गवासी, ग़ुलामअली तथा बेलूरी आदि प्रमुख हैं। उर्दू साहित्य का आरम्भ भी वस्तुत: दक्खिनी से ही हुआ है।' इसके अंतर्गत विभिन्न क्षेत्र में कार्य हो रहें हैं।

साहित्यिक काम जैसे कविताएं, कहानियाँ, उपन्यास, नाटक, और अन्य साहित्यिक रचनाएं दक्षिणी हिंदी में अनुवादित की जा रही हैं। इसके जरिए विभिन्न भाषाओं में लिखी गई रचनाओं का हिंदी में अनुवाद किया जाता है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में अनुवाद की जरूरत होती है। विशेषज्ञ लेखों, अनुसंधान रिपोर्टों, पत्रिकाओं, और अन्य तकनीकी सामग्री का अनुवाद दक्षिणी हिंदी में किया जा सकता है। व्यापारिक कार्यों, निवेश, बैंकिंग, और अन्य वित्तीय संबंधों के क्षेत्र में भी दक्षिणी हिंदी का अनुवाद किया जाता है। यह संदेश, प्रस्तावनाएं, और अन्य

व्यापारिक दस्तावेजों को समझने और उपयोग करने में मदद करता है। सरकारी कार्यालयों, निगम, और अन्य संगठनों के दस्तावेज़ों का अनुवाद भी दक्षिणी हिंदी में किया जा सकता है। यह सरकारी नीतियों, कानून, और अन्य अधिकारिक दस्तावेजों को सामान्य जनता के लिए समझने में मदद करता है। इन्हीं क्षेत्रों में दक्षिणी हिंदी का अनुवाद बड़े पैमाने पर किया जाता है, ताकि भाषाओं के बीच संचार और समझ में सुधार हो सके।

दक्षिणी हिंदी में कई साहित्यिक रचनाएं अनुवादित की जाती हैं, जो कि इस क्षेत्र की संवृद्धि और भाषाई धरोहर को संरक्षित करती हैं। मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ, उपन्यास और लेखन, रबीन्द्रनाथ टैगोर की कविताएं और नाटक, निराला, सुरेन्द्रनाथ नाथ, और भारतेंदु हरिश्चंद्र की कविताएं और उपन्यास, गुलजार की कविताएं और गीत आदि। मुंशी प्रेमचंद की कई कहानियाँ और उपन्यास दक्षिणी हिंदी में अनुवादित होते हैं, जैसे कि 'गोदान' और 'गबन'। साहित्यिक उपन्यासों का अनुवाद, जैसे कि 'नागमंडल', 'राग दरबारी' और 'श्रीरामा भारती' विभिन्न भाषाओं के उपन्यासों और कहानियों का अनुवाद भी किया जाता है। कविताओं का अनुवाद, जैसे कि 'गीतांजलि' और 'गीता-जयंती', साहित्यिक काव्य संग्रह, जैसे कि 'संचयन'। अनेक कवियों की कविताएँ भी दक्षिणी हिंदी में अनुवादित की जाती हैं। रवींद्रनाथ टैगोर, निराला, सुरेन्द्रनाथ नाथ, और गुलजार जैसे कवियों की कविताएं। विभिन्न भाषाओं के प्रमुख नाटकों का अनुवाद भी किया जाता है, जैसे कि शेक्सपियर के नाटक और भारतीय नाटक। जैसे साहित्यिक नाटक, 'अंतिम पाँच साल' और 'अभिनव रस्सी की जंजीरें' आदि।

विभिन्न भाषाओं में लेखित पुस्तकों का अनुवाद भी किया जाता है, जैसे कि धार्मिक ग्रंथ और विज्ञान संबंधित पुस्तकें। इस रूप में, दक्षिणी हिंदी के अनुवाद साहित्यिक विरासत को संरक्षित करते हैं और विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच

साहित्यिक अद्यतन और विश्वसनीयता को प्रोत्साहित करते हैं। विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच साहित्यिक विनिमय को भी प्रोत्साहित करते हैं। "दक्षिण भारत की प्राचीनतम तथा समृद्ध भाषा तमिल में भी अनुवाद की सशक्त एवं सुदीर्घ परंपरा उपलब्ध रही है। जैन कथाओं, बौद्ध कथाओं, महाभारत और रामकथा संबंधी जो साहित्य तमिल में रचित हुआ उसकी प्रेरणा अनुवाद ही रही। भारत की समस्त आधुनिक भाषाओं में जिन महत्त्वपूर्ण रचनाओं के सर्वाधिक अनुवाद हुए उनमें गीता, रामायण, भागवत पुराण, महाभारत तथा संस्कृत के विश्वप्रसिद्ध कवि कालिदास का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसी प्रकार सूफी साहित्य, फारसी की प्रेम कथाओं में लैला-मजनूं, गुलिस्तान-बोसतां, शाहनामा, सोहराब-रुस्तम आदि का भी अनेक भारतीय भाषाओं में लोकप्रिय अनुवाद हुआ।"[3]

तेलगु, कन्नड़, और तमिल आदि दक्षिण भाषा में लिखने वाले कुछ प्रमुख रचनाकारों की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद और उनके साहित्यिक योगदान बहुत हीं महत्वपूर्ण है, जिससे उनकी साहित्यिक धरोहर को बड़े पैमाने पर लोगों तक पहुंचाया जा सकता है। इसमें कविताएं, कहानियाँ, उपन्यास, नाटक, और अन्य लेखनात्मक कार्य शामिल हो सकते हैं। "दक्षिण भारत की संस्कृति और सभ्यता को, वहाँ के मूल्यों और विचारों को इसी सशक्त अनुवाद परंपरा ने विस्तार दिया। डॉ. इलापावलुरि पांडुरंग राव ने जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित अंमर कृति 'कामायनी' का 1974 में तेलुगु में अनुवाद किया। पांडुरंग राव द्वारा अनूदित 'कामायनी' महाकाव्य का तेलुगु पद्यानुवाद अनेक विशेषताओं से संपन्न है। पांडुरंग राव के अलावा तेलुगु में 'कामायनी' के अनुवादकों में दो अन्य अनुवादक श्री वाविलात सामयाजुल और जंध्याल पापच्य शास्त्री के नाम भी उल्लेखनीय हैं। इन्होंने 'कामायनी' के अतिरिक्त जयशंकर प्रसाद कृत 'आँसू' का भी अनुवाद किया है। संस्कृत के नीलकंठ दीक्षित के 'कलिविडबंनमु' का पंथानुवाद तथा जयदेव कृत 'पीयूष लहरी' के गेय रूपक में लयबद्ध अनुवाद भी किए गए।"[4]

तेलगु संत त्यागराजु की भक्ति भावनाओं से ओतप्रोत कविताएं हिंदी में अनुवादित की जाती हैं, जो भारतीय संगीत और साहित्य के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। तेलगु कथाकार और पत्रकार जशुआ रेड्डी की कहानियाँ हिंदी में अनुवादित की जाती हैं, जो उनके सामाजिक, राजनैतिक और साहित्यिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती हैं। तेलगु उपन्यासकार श्रीधर वेंकटसुब्रमण्यं की उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद किया जाता है, जो सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक मुद्दों पर आधारित होते हैं। तेलगु कवि और नाटककार काशी नाथ तिरुपति के कई लेखनात्मक कार्य हिंदी में अनुवादित किए जाते हैं, जो भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करते हैं। तेलगु के प्रमुख कवियों में वेमुलावाडा किशोर कृष्णा, स्रीशैलपति नारसिंहराव, और सुमित्रानंदन पंतुलु शामिल हैं, जिनकी कविताएं हिंदी में अनुवादित की जाती हैं। तेलगु के उपन्यासकार आर्थुर हैली, रवींद्रनाथ तागोर, और अनुशा रेड्डी की कहानियाँ हिंदी में उपलब्ध हैं। कन्नड़ के प्रमुख कवियों में कुवेंपुडु तेम्पान्ना, कुवेंपुडु रंगनाथ, और जयंत का कविताओं का हिंदी में अनुवाद होता है। कन्नड़ भाषा में लिखी गई अशोक मित्र, राजकुमार, और उदय शंकर के उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद किया जाता है। तमिल के अग्रणी कवियों में सुब्रमण्य भारती, भरतीयार, और बारथियार शामिल हैं, जिनकी कविताएं हिंदी में अनुवादित होती हैं। तमिल भाषा में लिखी गई जे.आर. राममूर्ती, सुधा मुर्ति, और सुब्रमण्य भारती की कहानियाँ हिंदी में अनुवादित की जाती हैं। “हिन्दी से तेलुगु और तेलुगु से हिन्दी भाषा में अनुवाद-प्रक्रिया नई नहीं है। संस्कृत के रामायण, महाभारत, गीता तथा अनेकानेक पुराणों को आधार बनाकर दक्षिण भारतीय भाषाओं में काफी संख्या में काव्य ग्रंथ लिखे गए। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शिष्टफ कृष्णमूर्ति शास्त्री एंड मंड नरहरि काय्या ने 'रामचरितमानस' का तेलुगु पद्यानुवाद किया। तेलुगु में अब 'मानस' के दर्जन भर अनुवाद उपलब्ध हैं। इस प्रकार तेलुगु से हिन्दी में भी अनुवाद की एक मजबूत श्रृंखला बनती जा रही है।”[5]

इन रचनाकारों की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद साहित्यिक विवेक, साहित्यिक परंपरा, और सामाजिक चेतना को विस्तार से समझने में मदद करता है। इनकी रचनाओं का हिंदी में अनुवाद साहित्य को विश्वसनीयता, विस्तार, और साहित्यिक धरोहर की अधिक जानकारी तक पहुंचाता है।

दक्षिणी साहित्य का हिंदी में अनुवाद करना एक महत्वपूर्ण कार्य है जो विभिन्न सांस्कृतिक और भाषाई धरोहरों को बाँटने और समझाने में मदद करता है। इससे लोगों को दक्षिणी भारतीय साहित्य, विचारधारा, और संस्कृति की समृद्धता का अनुभव होता है। यहां कुछ उत्कृष्ट उदाहरण हैं जिन्हें हिंदी में अनुवादित किया जा सकता है। दक्षिणी भाषाओं की वाणी के विशेषताओं का अनुवाद हिंदी में किया जा सकता है। इसमें तेलुगु, कन्नड़, तमिल, और मलयालम के उत्कृष्ट साहित्य को शामिल किया जा सकता है। दक्षिणी साहित्य में उत्कृष्ट नाटकों का हिंदी में अनुवाद किया जा सकता है। इसमें भारतीय क्लासिकल नाटक और सामकालीन नाटकों का समावेश किया जा सकता है। दक्षिणी साहित्य की उत्कृष्ट कविताएं हिंदी में अनुवादित की जा सकती हैं, जिससे उनका अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच मिल सके। दक्षिणी साहित्य की कहानियाँ और उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद लोगों को इनकी साहित्यिक धरोहर से परिचित कराता है। विभिन्न धार्मिक, ऐतिहासिक, और विज्ञान संबंधित ग्रंथों का अनुवाद हिंदी में किया जा सकता है। इस रूप में, दक्षिणी साहित्य का हिंदी में अनुवाद उसके महत्वपूर्ण साहित्यिक धन को विश्वसनीय रूप से प्रस्तुत करता है और भारतीय साहित्य की अधिक विस्तृत ज्ञान को लोगों तक पहुंचाता है।

संदर्भः

१. कृष्ण कुमार गोस्वामी - अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, पृ. सं. 15

२. एन ई विश्वनाथ अय्यर - व्यवहारिक अनुवाद, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, पृ. सं. 254

३. कृष्ण कुमार गोस्वामी - अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. सं. 470

४. कृष्ण कुमार गोस्वामी - अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. सं. 466

५. कृष्ण कुमार गोस्वामी - अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. सं. 466

डॉ. प्रियंका कुमारी

सहायक शिक्षक,हिंदी विभाग

सेंट फ्रांसिस महाविद्यालय, बेंगलुरु

संपर्क :- priyanilpawan@gmail.com

हिंदी गद्य साहित्य की सशक्त विधा है रेखाचित्र

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

रेखाचित्र मानव-मन की एक ऐसी रचना है, जिसमें प्रतिपल भावतरंगें विविध रूप एवं रंगों से तरंगायित करती है। कभी सजल कोमल हास बिखेरती है तो कभी सागर-सी गर्जना लिए संघर्ष से टकराती है। ऐसी अनुभूतियों को कला के माध्यम से शब्दों में ढालना ही रेखाचित्र है। मनुष्य द्वारा अनुभूत भावों की रेखाओं, रंगों, गतियों, ध्वनियों या शब्दों के माध्यम से हुई बाह्य अभिव्यक्ति कला है रेखाचित्र। रेखाचित्र के संदर्भ में कहा गया है- " रेखाचित्र का तात्पर्य होगा, रेखाओं के माध्यम से किसी जीव, पदार्थ या वस्तु के आकार को खींचना। रेखाचित्र चित्रकला का शब्द है। वस्तुतः रेखाचित्र एक ऐसी चित्रकला है. जिसमें रंगों का प्रयोग नहीं होता है और न मोटाई - चौड़ाई ही होती है, अपितु शब्दों के माध्यम से अपने अभिप्रेत भाव को मुखर बना देती है।"

रेखाचित्र गद्य साहित्य की स्वतंत्र विधा है। रेखाचित्र को स्वतंत्र विधा रूप में स्थापित करने का श्रेय पद्मसिंह शर्मा कृत 'पद्म पराग' को दिया जाता है। श्री सत्यपाल चुघ ने 'रेखाचित्र' के संदर्भ में कहा है कि "साहित्य का वह गद्यात्मक रूप, जिसमें एकात्मक विषय विशेष का शब्द रेखाओं से संवेदनशील चित्र प्रस्तुत किया जाता है, रेखाचित्र या शब्द चित्र है। "रामवृक्ष बेनीपुरी, यशपाल आदि ने इस विधा को 'शब्द चित्र' का समर्थन किया है। श्री बचन सिंह का अभिमत है कि "मुख्यतया बाह्य रेखाओं पर आधारित रहने के कारण लक्षित चित्रों को रेखाचित्र का नाम दिया जा सकता है। रेखाचित्रों में आलंबन के रूप सौंदर्य और उसकी चेष्टाओं आदि को संकेत दिया जाता है।"

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी निर्विवाद रूप से हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ रेखाचित्रकार माने जाते हैं। इनके रेखाचित्रों में हम सहज सरल भाषा-शैली में सिद्धहस्त कला कहीं भी देख सकते हैं। उन्होंने रेखाचित्र की परिभाषा देते हुए कहा है- "ये चलते-फिरते

आदमियों के शब्दचित्र हैं।" महान साहित्यकार बनारसीदास चतुर्वेदी के अनुसार- "रेखाचित्र खींचना एक कला है। थोड़ी सी रेखाओं के द्वारा एक सजीव चित्र बना देना किसी कुशल कलाकार का ही काम हो सकता है।"

संस्मरण और रेखाचित्र में अन्तर

स्वभावतः संस्मरण और रेखाचित्र की पारम्परिकता अनेकशः उन्हें एक रूपता के स्तर पर पहुँचाकर एक ही विधा की भंगिमाओं या विधियों के रूप में विज्ञापित करती हैं। सच तो यह है कि संस्मरण और रेखाचित्र वस्तु और शिल्प के अभिनव उपादान के रूप में परस्पर पूरक रहकर दूर तक समानान्तर विकसित हुए हैं तथापि दोनों में साहित्य रूपगत मौलिकता भिन्नता है। संस्मरण का विषय घोर वास्तविक और लेखक के अपने अनुभव का अंश होता है, जबकि रेखाचित्र का पात्र काल्पनिक भी होता है। संस्मरण के समस्त संदर्भ अथवा सम्पूर्णतः व्यक्त स्वरूप का ही कोई समर्थ अर्थ या प्रभाव होता है। वहीं रेखाचित्र में हर रेखा और अभिव्यक्ति की भंगिमा मुखर हो उठती है। सर्वोपरि संस्मरण आत्मपरक अधिक होता है और उसमें लेखक के अपने व्यक्तित्व का संस्मरण संदर्भ में समान होता है। रेखाचित्र में कलाकार की सी तटस्थता का बोध होता है। संस्मरण लेखक उन्मुक्त मन का वातायन खोलता है। वस्तुतः रेखाचित्र की आत्मा ही कला है, जबकि संस्मरण में सपाट अभिव्यक्ति भर आवश्यक है। दोनों में स्वतंत्र साहित्य के रूप में पर्याप्त भिन्नता भी है, फिर भी किसी संस्मरण से रेखाचित्र और रेखाचित्र से संस्मरण के अंश अलग करना सहज नहीं है। अतः दोनों में अन्तर करने के लिए रचना के मर्म की पहचान और गहरी दृष्टि आवश्यक है।

रेखाचित्र का स्वरूप

रेखाचित्र का शाब्दिक अर्थ 'रेखाओं का चित्र' है, किंतु इस विधा का शाब्दिक अर्थ से कोई संबंध नहीं है। रेखा जीवन को स्थूल रूप से सूक्ष्मता की अभिव्यंजना करती

है। रेखा- चित्रकार शब्दों के माध्यम से व्यक्तित्व का प्रकाशन करता है। कुछ आचार्यों ने कहानी की सीमा में ही रेखाचित्र को समाहित करने की चेष्टा की है, किंतु ये दोनों स्वतंत्र विधा हैं।

रेखाचित्र में अनुभूत चारित्रिक विशेषताओं को मार्मिकता से अभिव्यक्त किया जाता है। रेखाचित्र का विषय, वस्तु विशेष भी हो सकती है। कहानी में पात्र का होना अनिवार्य है।रेखाचित्र में स्थिर प्रकृति होती है, जबकि कहानी में गतिशीलता। रेखाचित्र में सांकेतिकता को महत्व दिए जाने के कारण, इस विधा को कहानी में समाविष्ट नहीं किया जा सकता है।

रेखाचित्र का उद्भव और विकास

कुछ समीक्षक अँग्रेजी के स्कैचेज से रेखाचित्र का उद्भव मानते हैं। यह कथन उपयुक्त नहीं है क्योंकि शब्द-चित्रों की प्रवृत्ति भारतीय साहित्य परंपरा के आरंभ से चली आ रही है। काव्यों के माध्यम से इसका उद्भव हो चुका था। गद्य में इसका आरंभ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के चरित्र-प्रधान निबंधों से हुआ। श्री भारतेन्दु ने 'कालीदास' रामानुचार्य, जयदेव, शंकराचार्य, बल्लभाचार्य, पुष्पदन्ताचार्य, सुकरात, सूरदास, बहादुर, राजाराम शास्त्री, महाराजाधिकार आदि निबंधों में कहीं-कहीं रेखाचित्र के तत्वों का समावेश किया है। इन निबंधों को स्वतंत्र रूप से रेखाचित्र नहीं कहा जा सकता है।

प्रथम रेखाचित्र के संदर्भ में श्री कृपाशंकर सिंह ने लिखा है- "सन् 1939 में निराला जी का 'कुल्लीभाट' प्रकाशित हुआ, जिसे एक प्रकार से आत्मचरित भी कहा जा सकता है। इसमें 'कुल्लीभाट' के चरित्र की रेखायें अपनी बाह्य आकृति को लेकर उभरी हुई है। इनकी शैली और गुण रेखाचित्र के अंतर्गत ही आते हैं। इसी क्रम में 'निराला' ने सन् 1941 में 'बिल्लेसुर बकरिहा' नाम की एक और कड़ी जोड़ दी।

रेखाचित्र के विकास में श्रीमती महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, देवेंद्र सत्यार्थी, डॉ प्रेम नारायण टण्डन, बनारसीदास चतुर्वेदी।

श्रीराम शर्मा, डॉ सुरेश कुमार जैन, श्रीप्रकाशचन्द्र गुप्त आदि का महती योगदान रहा है।

रेखाचित्र साहित्य के प्रकार

प्रवृत्ति के अनुसार रेखाचित्र के निम्नांकित प्रकार हैं-

सम्वेदनात्मक, स्नेह-समन्वित, श्रद्धा भक्ति, मनोवृत्ति प्रधान, प्रकृति सौंदर्यमूलक, तथ्य प्रधान, ऐतिहासिक, राष्ट्रीय भावना, व्यक्ति प्रधान।

वर्णन की शैलियाँ निम्न रूप में हो सकती हैं-

कथात्मक, निबंधात्मक, वर्णनात्मक, तरंगित, आत्मकथात्मक, डायरी, संबोधन, सूक्ति, संवाद। शैली के भी विविध रूप पाये जाते हैं-

भावात्मक, लाक्षणिक, चित्रात्मक, दार्शनिक, सम्वेदनात्मक, आलंकारिक।

प्रमुख रेखाचित्रकार

पंडित श्रीराम शर्मा ने 'बोलती प्रतिमा' नामक कृति में रेखाचित्र प्रस्तुत किये हैं- इसमें बोलती प्रतिमा, ठाकुर की आन, हरनामदास, वरदान, पीतांबर, फिरोजाबाद की कालकोठरी, चन्दा, वसीयत, रतना, अपराधी, इकाई का सौदा, रतना की अम्मा तथा इत्यलम् शीर्षक से रेखाचित्र प्रस्तुत किये हैं। उनके रेखांकन के संदर्भ में श्री कृपाशंकर सिंह ने लिखा है- "इन रेखाचित्र में हमें लोक जीवन की झांकी के साथ ही साथ अदम्य साहसिकता, राष्ट्रीयता, कर्तव्यनिष्ठा, समाज में व्याप्त रूढ़ियों की निंदा और उन्हें उखाड़ फेंकने की तत्परता आदि के चित्रण बड़ी प्रभावी शैली में प्राप्त होती है।"

हिंदी रेखाचित्र में श्रीमती महादेवी वर्मा का नाम विशिष्ट स्थान रखता है। उनके द्वारा लिखित 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति रेखाएं' तथा 'पथ के साथी' इस विधा की प्रमुख कृतियाँ हैं। महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में उनके जीवन की स्मृतियाँ रेखांकन कर पायी है। जीवन की अनुभूतियों के रंग-रूप को तरलता के साथ रेखाओं में ढालने का अथक प्रयास किया गया है। उन्होंने इन रेखाचित्रों में नारी-वेदना के मार्मिक अर्थों को

अभिव्यक्त किया है। नारी का विद्रोह अनेक स्थलों से उभर आया है- "स्त्री अपने बालक को हृदय से लगाकर जितनी निर्भर है,उतनी किसी और अवस्था में नहीं। वह अपनी संतान की रक्षा के समय चण्डी है, वैसी और स्थिति में नहीं।"

महादेवी वर्मा ने इन रेखाचित्रों में समाज के निम्न घटकों से चरित्र उठाये हैं। ऐसे दीन हीन व्यक्तियों का स्पर्श किया है, जिसमें मनुष्यता है। वेदना की टीस पाठकों को झंकृत किये बिना नहीं रहती। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने 'कुल्लीभाट' एवं 'बिल्लेसुर बकरिहा' रेखाचित्र लिखें हैं। इसमें अस्पृश्य वर्ग के प्रति मार्मिक सम्वेदना व्यक्त की गई है। इसकी शैली में पर्याप्त संवेदनात्मकता और चुटीलापन है। वर्णन में वास्तविकता स्पष्ट है। निराला ने अपने रेखाचित्रों में ग्रामीण जीवन की झांकी उपस्थित की है।

श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी के रेखाचित्रों में - रामलाल, चक्करदार चोरी, एक पुरानी कथा, नाम, बंदर की शिखा आदि श्रेष्ठ हैं। काका कालेलकर के गाँधी संस्मरण और विचार, कृष्णचंद्र के फूल और पत्थर, परिपूरणानंद के बीती यादें, कृष्णा सोबती के हम हशमत, शंकरदयाल सिंह के कुछ ख्यालों में कुछ ख्वाबों में, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर के महके आँगन चहके द्वार, माटी हो गई सोना, बाजे पायलिया के घुँघरू, क्षण बोले कण मुस्काये आदि रेखाचित्रकारों ने रेखाचित्र विधा को अत्यंत समृद्ध किया है।

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी रेखाचित्रकारों में विशिष्ट स्थान रखते हैं। 'लालतारा' उनके सब चित्रों का पहला संग्रह है। इसके अतिरिक्त प्रमुख रेखाचित्रों में 'माटी की मूरतें', 'गेहूँ और गुलाब', 'मील के पत्थर,' रेखाचित्रों के संकलन प्रकाशित हुए। इसमें- हलवाहा,यह और वह, कुदाल,शहीदों की चिता पर, हँसिया और हथौड़ा, डुगडुगी, नई संस्कृति की ओर, इन्कलाब जिंदाबाद, कस्मै देवाय हविषा विधेम, आँधी में

चलो, कुछ क्रांतिकारी विचार, जवानी, रेलगाड़ी, दीपदान, बलदेव सिह, बालगोबिन भगत, बुधिया, सरजू भैया आदि हैं।

दीपदान में अभावग्रस्तता का मार्मिक चित्रांकन हुआ है-

"माँ आज अपने घर में दीये नहीं जलेंगे?"

-माँ चौकी! चिकनी मिट्टी सानी। दीये गढ़े। अंचल से चीकड़े काड़ कर बत्ती जलाई।

-किंतु तेल!

-माँ की आँखें छलछला उठीं, बरस पड़ी। सामने पड़े दीये उससे भर चले। फिर गीली मिट्टी के इन स्नेहपात्रों को मिट्टी के रूप में परिणित होने में कितनी देर लगती! "

रामवृक्ष बेनीपुरी रचित 'माटी की मूरतें' में एक ऐसे व्यक्ति का चित्र उपस्थित किया गया है,जो हलवाहा है। वह कर्मठ और ईमानदार है. फिर भी जीवन के अंतिम वर्षों तक वह जीवन की विषमताओं से ही जूझता रहा और उसी में मर गया 'पड़े- पड़े मन ऊब जाता है, बबुआ! मगर ने जवाब दिया। इनके रेखाचित्रों की श्रेष्ठता का अनुमान मैथिलीशरण गुप्त के इस कथन से लगाया जा सकता है- "लोग माटी की मूरतें बनाकर सोने के भाव बेचते हैं, पर बेनीपुरी ने सोने की मूरतें बनाकर माटी के मोल बेच रहे हैं। श्री गुप्त जी का यह कथन बेनीपुरी के उत्कृष्ट रेखाचित्र 'माटी की मूरतें' के संदेश में है।

श्री प्रकाशचन्द गुप्त ने अपने रेखाचित्र' साहित्य 'के संदर्भ में लिखा है- 'मेरे पहले संग्रह रेखाचित्र ' की दिल्ली रेडियो पर आलोचना करते हुए अज्ञेय जी ने कहा था, मैंने मानवता का चित्रण न करके खण्डहरों का चित्रण किया था। यह सच था, लेकिन मानवता से प्रेरणा पाकर ही मैंने अपने विचार और भाव ऐतिहासिक भग्नालशेषों पर आरोपित किये थे। गुप्त जी ने' अल्मोड़े का बाजार 'आदि रेखाचित्र लिखे, जिसमें सामाज्यवादी शोषण के प्रति विद्रोह का स्वर प्रखर था। उनके कुछ रेखाचित्र 'पुरानी स्मृतियाँ और नये स्केच' शीर्षक से लिखे मिलते हैं । इस संकलन में

ताई, गाँव की सांझ, रानीखेत की रात, कुली, अन्धी, बंगाल का अकाल, पेट्रोल पंप, नया नगर,नल, इक्केवाला, सीमांत पूर्व, अमलतास, एक डायरी के पन्ने। नानी का घर, बुद्धिजीवी, शेरशाह की सड़क, गांधी के प्रति, लालाजी कलाकार, जागते रहो, मसूरी,अपराजित, उस पार, लेटर बाक्स, दरवाजा, खण्डहर, राजा की मंडी, कश्मीरी दरवाजा आदि रेखाचित्र संकलित हैं। इनके रेखाचित्र परंपरा से हटकर आधुनिकता का बोध लिए हुए हैं। आज के मानव के अंतर्गत व्यथा को सफलता के साथ चित्रित किया है। करुणा, सहानुभूति तथा राष्ट्रीयता के भाव-चित्र गहरी छाप छोड़ते हैं। इन रेखांकनों में नवीन दृष्टि 'लेटर बाक्स, पेट्रोल पंप आदि के द्वारा अभिव्यक्ति हुई है।

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी के रेखाचित्र इस विधा के विकासात्मक शब्दचित्र हैं, जिनके द्वारा इस विधा के क्षेत्र में नूतन द्वार खुल पाये हैं। श्री चतुर्वेदी ने रेखाचित्रों का माध्यम राष्ट्र एवं परराष्ट्र के शीर्षस्थ राजनीतिज्ञ, साहित्यकार, कलाकार, दार्शनिक और पत्रकार आदि को बनाया। इनके रेखाचित्र - आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्रद्धेय बाबू राजेन्द्र जी, श्री जवाहरलाल नेहरू, श्री देवमित्र धर्मपाल, श्री निवासदास शास्त्री, चिंतामणि, आचार्य गिडवानी, कवि रत्नाकर से बातचीत, श्री प्रेमचंद के साथ दो दिन, श्री सम्पुर्णानन्द, श्री राहुल सांकृत्यायन, श्रीराम शर्मा, श्री बालकृष्ण नवीन, एक सिपाही, सम्पादक की समाधि, लल्लू कब लौटेगी, मनसुखा और कल्ला, दीनबंधु ऐंड्रयूज आदि शीर्षकों से हैं। इन रेखाचित्रों में देश - विदेश के उन्नायकों का व्यक्तित्व - विश्लेषण हुआ है।

श्री देवेन्द्र सत्यार्थी 'रेखाचित्र' में भावात्मक शैली के प्रमुख लेखक हैं। इनके रेखाचित्रों का संकलन 'रेखायें बोल उठीं' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इसमें आज मेरा जन्मदिन है, अच्छे-भले आदमी की बात, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, चिर नूतन चित्र एवं सौंदर्यबोध नामक रेखाचित्र हैं। श्री सत्यार्थी के संदर्भ में समीक्षक श्री कृपाशंकर सिंह ने लिखा है- "अपने इन भावात्मक रेखाचित्रों में सत्यार्थी जी भावों के क्रम का निर्वाह

नहीं कर पाये हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक कुछ कहने के लिए उतावला है, लेकिन वस्तुतः वह कहना क्या चाहता है, इसे स्वयं निश्चित नहीं कर पाता। हाँ, कुछ चित्र अवश्य सुन्दर हैं और रेखाचित्र साहित्य में एक नई शैली को जन्म देते हैं।"

श्री प्रेम नारायण टण्डन का 'रेखाचित्र' शीर्षक से संकलन प्रकाशित हुआ, जिसमें मैं पत्रकार हूँ, अफसर, हिन्दी लेखक, कूकी, रोजी तथा हिन्दी नारी आदि संकलित हैं। श्री शिवपूजन सहाय की 'वे दिन वे लोग', कन्हैयालाल मिश्र की 'जिन्दगी मुस्कुराई', 'माटी हो गई सोना' तथा 'दीप जले शंख बजे', विनय मोहन शर्मा की 'रेखा और रंग, सत्यवती मलिक की 'अमिट रेखायें', शान्तिप्रिय द्विवेदी की 'स्मृतियाँ और कृतियाँ ',उपेन्द्रनाथ अश्क की 'रेखायें और चित्र', 'मन्टो मेरा दुश्मन', 'ज्यादा अपनी कम परायी ', जगदीश चन्द्र माथुर की' दस तस्वीरें'', 'जिन्होंने जीना जाना ', डॉ नागेन्द्र ने 'चेतना के बिम्ब' एवं सेठ गोविन्ददास की' स्मृति कण', 'चेहरे जाने पहचाने' , दिनकर कृत' लोकदेव नेहरू', सत्य जीवन लिखित' भारतीय की एलबम'. ओंकार शरद कृत 'लंकामहाराजिन', कैलाशनाथ काटजू लिखित' 'मैं भूल नहीं सकता,' हरिभाऊ उपाध्याय की कृति 'मेरे हृदय देव', महेन्द्र भटनागर की 'विकृत रेखायें ', पद्मिनी मेनन की 'चाँद', शिवानी की 'आमादेर शान्ति निकेतन' एवं हरिवंशराय बच्चन की 'नये पुराने झरोखे', विष्णु प्रभाकर के रेखाचित्र जाने अनजाने, कुछ शब्द कुछ रेखायें, हँसते निर्झर दहकती भट्टी आदि अनेक उत्कृष्ट कृतियाँ रेखाचित्र विधा को गद्य साहित्य में अतीव प्रसिद्धि देने में सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया है। हिन्दी जगत के अन्य सुप्रसिद्ध रेखाचित्रकारों में- सियारामशरण गुप्त, प्रभाकर, सत्यवती मलिका, हरिशंकर शर्मा, अन्नपूर्णा, प्रभाकर माचवे, फणीश्वरनाथ रेणु, भगवत शरण उपाध्याय, भदन्त, आनन्द कौशल्यायन, विजयलक्ष्मी पंडित, कैलाशनाथ काटजू, अमृतराय,रघुवीर सहाय एवं विद्या माथुर के नाम उल्लेखनीय हैं।

छायावादोत्तर युग रेखाचित्र का उत्कर्ष काल

छायावाद युग के बाद का साहित्यिक काल रेखाचित्र विधा की दृष्टि से उत्कर्ष काल ही कहा जायेगा। इस युग में रेखाचित्र विधा के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सन् 1939 में 'हंस' पत्रिका का रेखाचित्र विशेषांक प्रकाशित हुआ। इस अंक में 15 साहित्यकारों द्वारा लिखित रेखाचित्र सम्मिलित थे। सन् 1940 में बनारसीदास चतुर्वेदी के संपादन में 'मधुकर' का रेखाचित्र विशेषांक प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त, माधुरी (लखनऊ), विशाल भारत (कलकत्ता),सरस्वती (प्रयाग). सुधा (लखनऊ) तथा हंस (वाराणसी) आदि सुप्रतिष्ठित पत्रिकाओं में रेखाचित्र विधा को स्थान मिला।

आधुनिक युग में संस्मरणात्मक शैली में रेखाचित्र लिखे गये। ऐसे रेखाचित्रकारों में सत्यजीवन वर्मा, ओंकार शरद, इन्द्र वाचस्पति, रायकृष्ण दास, कुन्तल गोयल, पद्मिनी मेनन, लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु', शिवानी, महेन्द्र भटनागर, दिनकर जी का नाम अविस्मरणीय है।

आज भी हिन्दी साहित्य को समर्पित पत्रिकायें यथा - आजकल,हिन्दी साहित्य भारती, गगनांचल, हिन्दी कौस्तुभ, हिन्दी भाषा भारती,संस्कृति, सम्पर्क भाषा भारती, वैचारिकी, जयतु हिन्दी विश्व, सौरभ, पुस्तक संस्कृति, वसुधा,साहित्य का विश्व रंग, भारत भवन इत्यादि हिंदी साहित्य की अन्य विविध विधाओं के साथ रेखाचित्रों के लेखकों को भी सम्मानित स्थान प्रदान कर रहीं हैं।

इस प्रकार समग्र विवेचन के आधार पर यही कहा जा सकता है कि अभी भी इस विधा में नूतन सम्भावनाओं की अपेक्षा है। यह विधा अपने आप में इतनी व्यापक है कि इससे अनेक शैलियों का जन्म हुआ है और अल्प समय में इस विधा ने आशातीत सफलता प्राप्त की है।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र, 117 आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ 226022

✍ कथा खंड

रामधुन

डॉ. सतीश "बब्बा"

रामधुन सिर्फ नाम का रामधुन नहीं था। वह वास्तव में धुन का पक्का आदमी था। रामधुन तब भी मजदूरी करता था जब दस रुपए दिहाड़ी थी। और रामधुन एक कुंतल अनाज से भरा बोरा पीठ पर लादकर बैलगाड़ी में रख देता था।

फिर बीस रुपए और फिर तीस रुपए दिहाड़ी मजदूरी हुई। तब भी रामधुन दिन भर अपने और अपने परिवार, बच्चों के लिए दो जून की रोटी का जुगाड करने में दिन को दिन और रात को रात नहीं समझता था।

रामधुन दीन का भी बहुत पक्का था। वह अपनी मेहनत की कमाई पर विस्वास करता था।

अब सौ रुपए के बाद ढाई सौ रुपए दिहाड़ी मजदूरी हुई। गांव के प्रधान ने उसे जाब कार्ड बनाया। आज ईमानदार को लोग इसलिए पूछते हैं कि ईमानदार से कोई खतरा नहीं होता है। लेकिन ईमानदार आदमी कभी बड़े बड़े विकास नहीं कर सकता।

प्रधान रामधुन को एक सीमित काम दिया करता था। बच्चे रामधुन के बड़े होने लगे थे। अब दो जून की रोटी का इंतजाम और कठिन हो रहा था। फिर भी रामधुन ने हिम्मत नहीं हारी और जो भी काम मिलता वह उसे मन से करता, अपनी मेहनत में उसने कभी भी कमी नहीं किया था। और अपने परिवार को दो जून की रोटी का इंतजाम कर ही लेता था!

सभी बाप की तरह रामधुन ने भी सपना देखा था। और लड़कों की पढ़ाई में कोई कोर कसर नहीं छोड़ा था; जो उसकी हैसियत थी। लड़कों की पढ़ाई में जो रामधुन के पास जमीन का एक छोटा सा टुकड़ा था वह भी बिक गया था।

रामधुन तो न कोई तीर्थ स्थल गया था और न कोई मेला ही गया था। रामधुन अपना जीवन यापन मजदूरी से दो जून की रोटी का जुगाड करने में लगा दिया था।

रामधुन ब्राह्मण था और उसके भी सपने थे कि, लड़के पढ़ - लिखकर नौकरी पा जाएंगे और वह भी आराम करेगा, तीर्थ - व्रत करेगा। लेकिन यह क्या ब्राह्मण तो सामान्य वर्ग में आता है। रामधुन के लड़के अच्छे नंबरों से पास हुए थे। टेस्ट और इंटरव्यू में भी अव्वल आते थे। फिर भी उससे कम नंबर वाले लोग नौकरी पा जाते थे और ब्राह्मण होने की वजह से, आरक्षण कोटा भरने की वजह से रामधुन के लड़के लटक जाया करते थे।

रामधुन को बड़ी ग्लानि होती थी। और कभी-कभी रामधुन सोचता आत्महत्या कर लूं! फिर रामधुन पत्नी और बच्चों को देखकर जीने का मन बना लिया करता था।

रामधुन अभी भी उसी कच्चे मकान में रहता था। उसे आवासीय योजना आदि का कोई भी लाभ नहीं मिला था।

रामधुन के बाल सफेद होने लगे थे। अब बदन की झुर्रियां बता रही थी कि, तुम बूढ़े हो गए हो! फिर भी पापी पेट का सवाल था और रामधुन दो जून की रोटी के चक्कर में सुस्ता भी नहीं पा रहा था।

बेटे पढ़ कर अब मजदूरी करने की स्थिति में नहीं थे।

लड़के सूरत भाग गए, यहां घर की हालत देखकर! सूरत में किसी तरह बड़ी मुश्किल से सिक्योरिटी गार्ड की नौकरी मिली थी।

सुबह उठकर सेठों की गाड़ियां धोना और खाना बनाना और बारह घंटे की ड्यूटी करना। एक ग्रेजुएट लड़कों को भाया तो नहीं लेकिन, मरते क्या न करते!

लड़के जानते थे कि, अब बाप के लिए दो जून की रोटी का इंतजाम करना बहुत बड़ी चुनौती है।

किसी तरह से रामधुन के लड़के, जैसे - तैसे सिक्योरिटी गार्ड की नौकरी कर रहे थे। उनके भी सपने थे कि, बाप अब काम करना बंद कर दे।

यहां रामधुन इस चिंता में था कि, मेरी गरीबी देखकर मेरे लड़कों की शादी कैसे होगी।

यहां रामधुन के एक लड़के को तो सूरत का पानी कुछ असर कम किया था लेकिन, बड़े लड़के की तबीयत सूरत में ही खराब हो गई थी।

पहले तो रामधुन का छोटा वाला लड़का अपने भाई की दवा वहीं करवाता रहा था लेकिन पैसे भी नहीं हो पा रहे थे। और दवाओं का कोई असर भी नहीं हो रहा था। भाई दिन दिन कमजोर होता जा रहा था। किसी तरह से आरक्षण हो पाया और भाई को रेलगाड़ी से घर के लिए लेकर चला।

अब रेलगाड़ी में जनरल डब्बा कम होते हैं। जनरल डब्बा में यात्रा करना संभव नहीं है; फिर कोई मरीज लेकर कैसे आ सकता था। और यही हाल शयनयान स्लीपर कोच का भी है।

सरकार ने अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए वातानुकूलित डिब्बे बढ़ा दिए हैं। और मजबूर रामधुन का छोटा लड़का अपने भाई को वातानुकूलित डिब्बे की टिकट लेकर चला था। उसके सारे पैसे चुक गए थे।

घर आकर तमाम कोशिशों के बावजूद रामधुन का बड़ा बेटा नहीं बच पाया था। और मां को बेटे की मौत का गहरा सदमा लगा और कुछ दिनों में मां भी, रामधुन की पत्नी भगवान को प्यारी हो गई थी।

रामधुन बेटे के सदमे से उबर भी नहीं पाया था कि, पत्नी का साथ छूट जाना उसके बर्दाश्त के बाहर था और रामधुन अब अर्ध पागल सा हो गया था।

रामधुन के छोटे बालक ने धैर्य से काम लिया। वह पढ़ा लिखा था। गांव में काम नहीं मिलता तो पड़ोस के गांव और कस्बों में दस - दस किलोमीटर पैदल चलकर वह खुद मजदूरी करने लगा था।

वह रामधुन से कहता था, "बाबू जी आपने बहुत किया अब आप आराम कीजिए, मैं आपका बेटा हूं, दो लोगों के लिए दो जून की रोटी का जुगाड कर ही लूंगा!"

रामधुन को यह चिंता थी कि, 'मेरा वंश क्या यहीं समाप्त हो जाएगा?'

अब छोटा लड़का किसी तरह से दो जून की रोटी का इंतजाम करने लगा था। रोटी बनाने वाला नहीं था। और इतनी दर्दनाक घटनाओं से वह भी बहुत चिंतित रहता था। बाप की ऐसी हालत उस बंदे से सहन नहीं हो पा रही थी।

रामधुन बस वही दो जून की रोटी के चक्कर में जिंदगी भर संघर्ष करता रहा आया। और अब बड़े बेटे का जाना, पत्नी का साथ छूटना एक असह्य, पीड़ा दायक घटनाएं थीं!

रामधुन अब यही सोचता है, 'क्या हुआ, क्या मिला पढ़ाने - लिखाने से? आखिर मेरी तरह यह मेरा बेटा भी तो दो जून की रोटी जुटाने के चक्कर में रात - दिन एक कर रहा है।

रामधुन के लिए यह सभी प्रश्न अनुत्तरित थे कि, क्या मेरे इस बेटे को कोई अपनी बेटी दे सकता है? ताकि मेरा भी वंश आगे बढ़ता रहे!

दो जून की रोटी के जुगाड में रामधुन का छोटा बेटा पढ़-लिखकर ग्रेजुएट थकता जा रहा था।

रामधुन खुद नहीं जानता कि, आगे क्या होगा और क्या होने वाला है!

दो जून की रोटी के चक्कर में रामधुन और रामधुन का बेटा लगे रहते हैं। न ही रामधुन तीर्थ जानता है कि, कैसे होते हैं और न यही जानता है कि, दो जून की रोटी जुटाने के अलावा संसार में और कुछ महत्वपूर्ण है।

रामधुन का बेटा अपने पिता को दिनों-दिन बूढ़ा होता देखकर बहुत ही चिंतित है।

वह भी सोचता है कि, 'क्या मेरे बापू मेरे लिए पत्नी और अपने लिए बहू का जुगाड कर पाएंगे?'

आज भी रामधुन का बेटा मजदूरी करता है और बाप बना रहे यह उपाय भी करता रहता है।

ऐसा लगता है कि, एक अच्छे संस्कार, स्वभाव का अच्छा आदमी सारी उम्र दो जून की रोटी में लगाने वाले रामधुन को बहू मिलेगी या नहीं?
क्योंकि हर ब्राह्मण लड़की का बाप सरकारी नौकरी वाला वर, लड़का ढूंढ़ रहा है।
और तो और अब लड़कियां दूसरी जाति में भी भाग्य आजमाने लगी हैं!

डॉ. सतीश "बब्बा"

पता- डॉ. सतीश चन्द्र मिश्र, ग्राम + पोस्ट = कोबरा,

जिला- चित्रकूट, उत्तर - प्रदेश, पिनकोड - 210208.

मोबाइल - 9451048508, 9369255051.

ई मेल - babbasateesh@gmail.com

✍ काव्य खंड

ललन चतुर्वेदी की कविताएं

दुःख मेरा सहोदर भाई है

वह मेरे जन्म के ठीक अगले पल में पैदा हुआ
उसे देख मैं रो पड़ा
उसके जन्म से बेखबर आसपास खड़ी स्त्रियों ने हँसकर मेरा जन्मोत्सव मनाया
सबने मेरी माँ को बधाई दी

कभी किसी को भनक तक नहीं लगी और वह मेरे साथ - साथ पलता रहा
उसे माँ के दूध की कभी जरुरत महसूस नहीं हुई
वह मेरी खुशियों को पीकर घूमता रहा मदमस्त
जब कभी आते मेरे जीवन में खुशियों के मौके
वह आ धमकता अनामंत्रित हिस्सेदार की तरह

वह वास्तव में मुझसे छोटा था
इस नाते मेरे प्यार का अधिकारी था
कैसे कर सकता था मैं उसके अनिष्ट की कामना
जब भी मिला मैंने हँस कर उसका स्वागत किया

उसने कभी मेरे साथ धोखा नहीं किया
मैंने भी उसका पूरा- पूरा हक दिया
उसने भी अनुज होने का फर्ज निभाया
मेरे जाने के बाद ही विदा हुआ

दुःख मेरा सहोदर भाई था
मैं देख भी कैसे सकता था, उसे पहले जाते हुए।

खोज

कुछ भी तो भुला नहीं
फिर भी सबके सब लगे हैं खोज में
हर समय खोज रहे हैं लोग कुछ न कुछ
यह जिज्ञासा समय है
थकी अंगुलियां अनुनयरत
कांप रही हैं थर- थर-
इतना मत लो हमसे काम

सदियों से लोग खोज रहे हैं
देवताओं ने तो खोज में कर दिया था समुद्र - मंथन
लगे थे दानव भी साथ
सब जानते हैं किसको क्या लगा हाथ

यह जानने की पिपासा
हमें धकेल रही है रेगिस्तान में
हम खोज रहे हैं एक - दूसरे को अनवरत
ढूंढे जा रहे हैं अपरिचित और परिचित भी

हम खोज रहे हैं सिक्ता में स्वर्ण

धूप में चलते-चलते हो गए हैं विवर्ण
अपनी त्वचा को चमकाने के लिए करना चाहते हैं जतन
विविध विषय, अनंत क्षेत्र हैं हमारी खोज की
परिधि में
हमें महारत है समर्थ प्रविधि में
हमें विश्वास अर्जित करना है ससाक्ष्य
हम भरोसा नहीं कर सकते आंख मूंद कर
हमें भरोसा नहीं रहा पवन और पानी पर
हमें भरोसा नहीं रहा अन्न और वनस्पतियों पर
हम ढूंढ रहे हैं हर पल एक बेहतर विकल्प
हम ढूंढ कर ही मानेंगे सर्वोत्तम ?

हम ढूंढ रहे गांव में शहर ,शहर में गांव
शहर में महानगर , महानगर में शहर
भारत में अमरीका ,अमरीका में भारत
छांव में धूप,धूप में छांव
हम बेचैन हैं विकसित करने के लिए
ढूंढने के उन्नत से उन्नत उपकरण
मुझे अलगाना है हम से मैं
बढ़ने लगा है खुद के खोने का भय
यहां सब ढूंढ रहे हैं एक-दूसरे को
मुझे ढूंढ रही है मेरी पत्नी
मैं पत्नी को ढूंढ रहा हूं

मैं ढूंढ रहा हूं, बच्चों को , दोस्तों को
जरूर,वे भी ढूंढ रहे होंगे मुझे
आखिर कहां खो गए सब के सब
सबको ढूंढते -ढूंढते सचमुच खो गया हूं
मेरा पता चले कभी तो इत्तिला करना।

उसके जाने से कोई क्षति नहीं हुई है

अब वह चले गए हैं
सारी क्रियाएं बहुवचन हो गईं हैं
शब्दकोश के समस्त सम्मानसूचक शब्द
शोक सन्देशों में सितारे की तरह टॉक दिये गए हैं
जो तरसते रहे प्रेम के एक गुलाब के लिए
उन्हें पुष्पों से आच्छादित कर दिया गया है

वह कह रहे हैं- "अब तो बख्श दो मेरे भाई!
मत गढ़ो मेरे बारे में तरह- तरह के झूठ
मैं स्वर्ग नहीं जा रहा
मत कहो मुझे महान आदमी
मेरे हिस्से के सच को झूठ बनाकर मत बोलो
मैं बहुत सुकून से हूँ,निकल आया हूँ भीड़ से
मुझे सोने दो आराम से चिर निद्रा में
तुम्हारी चीख-पुकार, तुम्हारे मंत्रोच्चार ,
तुम्हारे समस्त उपचार

भंग कर रहे हैं मेरी शांति
आहत कर रहे हैं तुम्हारे असंख्य झूठ
तुम लोग कैसे कर लेते हो -
झूठ का इतना शानदार अभिनय !
बहुत साल गया दो मिनट के मौन के पहले
तुम्हारा पॉंच मिनट का भाषण
हृदय विदीर्ण कर गई
सभागार से निकलते हुए लोगों की हॅंसी
आशा थी कि कम से कम आज सच बोला जाएगा
ऑंखें मूँदे मैं बड़े ध्यान से सुन रहा था-
बहुत अच्छे आदमी थे
सचमुच खुश हो जाता यदि छांट देते
अपने भाषण से सारे अतिरिक्त शब्द और
सिर्फ इतना ही कह देते-
जो चला गया हमारे बीच से
वह भी एक आदमी था
अब हमें उसके बारे में चुप रहना चाहिए
उसके जाने से कोई क्षति नहीं हुई है।"

अनाम लोग

(एक)

ठीक है कि वे अपने काम से काम रखते हैं
दौड़े - भागे नहीं पहुँचते हैं आपके दुःख - दर्द में
आपके सुख के दिनों में ठुमके नहीं लगाते आपके साथ

मतलब रखते हैं आते- जाते दुआ सलाम तक
पर सच ये भी है कि कभी नहीं काटते आपकी लहलहाती फसलें
कभी आपने उन्हें किसी की निंदा करते हुए सुना ?
महाराज!
शिकायत तो आपको सिगरेट पीती हुई लड़कियों से भी है
पर कोई शिकायत नहीं है अपने चरित्रहीन शराबी पुत्तर से
अपने ड्राइंग रूम में जब कहकहों के बीच खोलते हैं औरों की शिकायतों का पुलिंदा
उस समय भूल जाते हैं कितने काले- कारनामें आपके भी दबा कर रखे गए हैं फाइलों में
आप तो अतल में कालिखों को छिपाकर रखते हैं
और दिखाते हैं सिर्फ सफेदी बड़ी चतुराई से
आपसे बेहतर तो वे जरूर हैं जो रखते हैं चौराहे पर अनावृत्त होने की हिम्मत
दुनिया में अब भी बचे हुए हैं कुछ ईमानदार लोग
जिन्हें आप मूर्ख समझते हैं
वे वही हैं जो कभी नहीं बिकते हैं
जैसे हैं हमेशा वैसे ही दिखते हैं।

(दो)

हलवाई मिठाई नहीं खाते
काम निबटाने के बाद
अपने लिए बना लेते हैं चावल -दाल
लोग कहते हैं मिठाइयों की सुगन्ध से भर जाता है उनका मन

घर में जो आती है रसोइया
बनाती है किसिम -किसिम के पकवान
उसे जाते समय मिलती है रात की बची हुई रोटी
क्या उसका भी मन भर जाता है व्यंजनों से?

जो बनाते हैं गगनचुंबी इमारतें
सोते हैं जमीन पर एस्बेस्टस डाल
इमारतें जब सज-धज कर दुल्हन की तरह हो जाती हैं तैयार
वे गृह-प्रवेश तक में नहीं होते आमंत्रित

मेट्रो में सफर करते हुए
दिन-रात काम करते मजदूर याद नहीं आते
लोग विकास -पुरुष को कहते हैं शुक्रिया
पुलों से गुजरते हुए राष्ट्राध्यक्ष ही याद आते हैं

निर्माताओं की कभी हुई है शिनाख्त ?
लोकार्पण के शिलापट्टों में कहीं खुदे दिखते हैं इनके नाम ?
इतिहासकारों की आँखों से वे क्यों हो जाते हैं ओझल ?
जबकि विध्वंसक विराजमान हैं अनेक पृष्ठों पर

महफ़िलों में कभी धूल -पसीने से सने लोगों की बन सकेगी जगह ?
जब भी मिलना हो इनसे चले जाइए निर्माण स्थलों पर

ये वहीं खड़े मिलेंगे पेड़ की तरह
ये रमता जोगी हैं , बहता पानी हैं
जिनलोगों का कोई नाम नहीं होता
उनका नाम काम होता है
सुविधानुसार लोग जोड़ लेते हैं अंत में वाला या वाली।

अतिथि

सुबह - सुबह सहमते हुए
मैंने उनके घर की कॉल बेल बजायी
अपराधी की तरह मैं खड़ा था दरवाजे के बाहर
किवार को पकड़े वह भी खड़े थे हतप्रभ
मेरे हाथ में बैग मिनटों तक लटका रहा

हालचाल पूछने के बजाय
हवा में तिरने लगा एक वाक्य
धीमी गति की गेंद की तरह -
आने के पहले फोन तो कर लिया होता एक बार
मैं तो पहले ही आउटर पर खड़ा था किंकर्तव्यविमूढ़
समझ गया सिग्नल का गूढ़ अर्थ

मैंने घर लौटकर शब्दकोश को पलट कर देखा
सोचा कुछ शब्द आखिरी साँस ले रहे हैं
और दे रहे हैं नये शब्द-शिशुओं को असमय में जन्म
अब शब्दों का जन्म-मरण, हर्ष-विषाद का विषय नहीं है।

संपर्क: 202, असीमलता अपार्टमेंट, मानसरोवर इनक्लेव, एन्सिलीरी चौक के निकट हटिया, रांची-834003 lalancsb@gmail.com

वितस्ता खंड

मेरी कश्मीर यात्रा : एक कश्मीरायण

(यात्रा वर्णन)

प्रो. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर

यात्रा मेरे जीवन का अहम अनुभव है। बचपन से लेकर अब तक की जीवन यात्रा में मुझे यात्रा के प्रति अकथनीय जिज्ञासा रही है। यात्रा में मुझे अनेक विध अच्छे और बुरे अनुभव आए हैं। हिंदी के प्रसिद्ध यात्रा कार महापंडित राहुल सांकृत्यायन जी ने सही कहा है–

"सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहां।
जिंदगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहा।।"

फिलहाल जन्म एक ही बार होता है और जवानी भी केवल एक ही बार आती है। साहसी और मनस्वी तरुण–तरुणीयों को इस अवसर से हाथ नहीं धोना चाहिए। महापंडित जी कहते हैं कि, हे जवानों कमर बांध लो और संसार तुम्हें तुम्हारे स्वागत के लिए बेकरार है, घुमक्कड़ हो जाओ, यात्रा पर निकलो।

यात्रा पर निकलने की तैयारी चल रही थी उसी दरमियान दोबारा कश्मीर यात्रा पर निकलने के लिए मन कर रहा था तभी एक मराठी गीत रेडियो पर सुनाई दिया।

"हे चिंचेचे झाड दिसे मज,
चिनार वृक्षापरी
दिसशी तू नवतरुणी काश्मिरी"

इस ब्लैक एंड व्हाइट मराठी फिल्म में अभिनेत्री उमा भेंडे, अभिनेता काशीनाथ घाणेकर और गायक महेंद्र कपूर की पहाड़ी आवाज की संगत हाल ही में सुना था। मन को आश्चर्य हुआ कि "चिनार" का पेड़ इतना सुन्दर क्यों है.......!

मैं बचपन से इस युगल गीत को रेडियो पर सुनता आ रहा हूं, लेकिन कभी इसकी व्याख्या करने की कोशिश नहीं की। जब मैं और मेरा परिवार कश्मीर गए तो कश्मीर की खूबसूरती और चिनार के पेड़ देखकर मेरा मन समझ गया कि "चिनार" का पेड़ और कश्मीर की खूबसूरती को।

चिकुर्डे-सांगली के "विशाल - सागर टूर्स एंड ट्रैवेल्स" कंपनी ने कश्मीर के मेरे सपने को साकार किया। कंपनी के प्रबंधक भी अपने पूरे परिवार के साथ हमारे साथ आए थे। चूंकि टूर में ज्यादातर लोग शिक्षक थे, इसलिए कब वे आपस में उलझ गए, उन्हें पता ही नहीं चला। फ्लाइट के टिकट बुक होने के बाद से तैयारियां जोर-शोर से शुरू हो गई। कश्मीर जाने से पहले मेरे मन में कई सवाल थे। उदाहरण के लिए: हमारे पूर्वज ऋषि कश्यप ने कश्मीर का निर्माण कैसे किया होगा? हवाई यात्रा का मेरा पहला अनुभव.......वास्तव में स्वर्ग या जन्नत क्या है? कश्मीर से धारा 370 और 35ए हटाने के बाद कैसा होगा कश्मीर? क्या कश्मीर सचमुच वैसा ही है जैसा कई फिल्मों में दिखता है? ऐसे कई प्रश्न मेरे मन में थे।

आरंभ में हमने अपने गांव से निजी स्लीपर कोच बस से कोल्हापुर किनी वाटर- मुंबई तक की यात्रा की। सुबह-सुबह हमारी कार मुंबई एयरपोर्ट के पास पहुंची लेकिन एयरपोर्ट हम समय से पहले पहुंच चुके थे। इसी कारण हमें प्रवेश द्वार पर ही सुबह आठ बजे तक इंतजार करना पड़ा। आपको आपकी यात्रा से पहले दो या तीन घंटे से अंदर जाने के लिए नहीं दिया जाता।हवाई जहाज के उड़ान से पहले आपको दो घंटे से पहले ही अंदरजाने की इजाजत है। उसी दरमियान हमने देखा कि अनेक यात्रियों को ले जाकर आने जाने वाली अनेक कार गाड़ियां, बस गाड़ियां आती और जाती रही। सही समय के बाद हमने अपनी बैगों कीडिजिटल मेटल डिटेक्टर द्वाराजांच करवाई । एक व्यक्ति के लिएट्रैवल बैग 15 किलोग्राम और छोटा पर्स या शबनम 05-07 किलोग्राम सामान तक ले जाने की इजाजत है। उससे अधिक 05 किलो तक सामान के लिए 3000 अधिक भरने पड़ते हैं । सही समय पर हमें अंदर जाने दिया।

मुंबई के भव्य दिव्य हवाई अड्डे को देखकर मेरा दिल भर आया। इंडिगो" कंपनी का विमान हमें ले जाने के लिए तैयार था। प्रमुख द्वारा से हवाई अड्डे के दफ्तर और वहां से हमें हवाई जहाज तक वातानुकूलित बस से छोड़ा गया। दरवाजे पर फ्लाइट अटेंडेंट, पायलट और एयर होस्टेस ने मुस्कुराते हुए हमारा स्वागत किया। विमान में चढ़ने के बाद मैंने सबसे पहले कॉकपिट में देखा। बैठने

की व्यवस्था सिनेमा थिएटर के सीट नंबर की तरह थी। प्रारंभ में, हवाई सुंदरी ने हवाई जहाज उड़ान संबंधी कुछ सूचना और जानकारी दी। अपनी राष्ट्रीय भाषा में कम लेकिन सटीक शब्दों में निर्देश दिए। विमान ने रनवे छोड़ दिया। हमने तुरंत अपनी सीट बेल्ट कस ली, विमान आसमान में उड़ गया। मन रोमांचित हो गया। जैसे ही विमान ऊपर चढ़ा, मुंबई शहर की विशाल इमारतें बक्से जैसी दिखने लगीं। हवाई यात्रा के दौरान मैंने कुछ चीजों पर ध्यान दिया। हवाई सुन्दरियाँ न केवल सुन्दर होती हैं, बल्कि वे अपनी जिम्मेदारियां वह बखूबी से निभाती है। एक बात को बारीकियां से देखा कि हवाई जहाज़ पर पानी के अलावा कुछ भी मुफ़्त नहीं है। हवाई अड्डे पर 100 में एक कप कॉफी या चाय 100 में पीने के पानी की बोतल,साफ सुथरापन और आपकी यात्रा की सारी सुविधाएं भी वहां आपको मिलती है। हमारे हिसाब से काफी महंगी चीज थी लेकिन हमारे आस पड़ोस में बैठे अमीर लोग अधिक पैसों को नहीं देखते, वह खरीदते थे। कोल्ड ड्रिंक 500 में बर्गर पिज़्ज़ा 750 से लेकर 1000 रुपए तक हवाई जहाज में बेचा जा रहा था। इन्हीं दरों पर काम अधिक मात्रा में हवाई अड्डे पर भी सुविधा मिलती है।

कोहरे के बीच तीन घंटे की यात्रा के बाद विमान की बंद खिड़की से बाहर देखने पर बर्फ से ढके पहाड़ों की चोटियाँ दिखाई देने लगीं। हवाई जहाज की खिड़की से बाहर झांकने के बाद मन उल्हासित हुआ। सामने शुभ्र दिखने वाला आकाश और दिल की बढ़ती धड़कन एक अलग प्रकार का आनंद दे रही थी। तभी विमान की गति कम हो गई। यहाँ तक कि जब हम मेला यात्रा में लगे झूले- पालने से नीचे आते हैं ठीक वैसी स्थिति होती है... मुझे अपने पेट में एक डर का गोला महसूस हुआ। हम सुरक्षित श्रीनगर हवाई अड्डे पर पहुँच गए। हमने देखा की जगह-जगह मिलिट्री के सैनिक,गार्ड, पुलिस मौजूद थे। सुरक्षा बहुत कड़ी थी। सबसे पहले मैं शो केस में रखे बड़े लकड़ी के हंटर की ओर आकर्षित हुआ।श्रीनगर हवाई अड्डावहां की प्राकृतिक सुंदरतारंगी बिरंगे गुलाब के फूलों ने मन मस्तिष्क को प्रसन्न कर दिया। एयरपोर्ट से निकलने से पहले हमने मोबाइल फोन में कश्मीर का एक अस्थायी सिम कार्ड लगाया। ट्रैवल कंपनी द्वारा बुलाई गई 20 सीटर वाली

मिनी लग्जरी बस और ड्राइवर इमरान हमारे स्वागत के लिए उपस्थित था । हवाई अड्डे से हम होटल के लिए निकल पड़े।

रास्ते में हमने प्रसिद्ध झील "दल सरोवर" का चक्कर लगाया और निजी वाहन से लॉज में रुकने से पहले "निशात बाग" देखने गए। बर्फ से ढकी पीर पंजाल श्रृंखला के नीचे एक विस्तृत झील "डल झील" है। निशात बाग पूर्व में डल झील के किनारे स्थित है। निशात का अंग्रेजी अर्थ 'हैप्पी गार्डन' है। सम्राट जहाँगीर और बेगम नूरजहाँ ने इस उद्यान का दौरा किया था। निशात बाग चिनार और सरू के पेड़ों की कतारों से घिरा हुआ था। अनेक रंग, (फूलों पर बैठी तितलियाँ भी पहचानी नहीं जा सकीं।) विभिन्न आकृतियों के फूल बगीचे की शोभा बढ़ा रहे थे। छोटे-छोटे झरने और ठंडे पानी के फव्वारे मन को आकर्षित कर रहे थे। बगीचे से बर्फ से ढकी चोटियाँ आसमान में सफेद बादलों की तरह लग रही थीं। निशात बाग कश्मीर का सबसे बड़ा मुगल उद्यान है। बगीचे में वनश्री को देख कर मन मोहित हो गया।

श्रीनगर में हम रात के लिए "लोन पैलेस लॉज" में रुके। जब हम वहां पहुंचे तो हमारा बहुत अच्छा आतिथ्य सत्कार किया गया। लॉज पूरी तरह से

लकड़ी से बना है। कश्मीर के बंगले वास्तव में वास्तुकला के अद्वितीय उदाहरण हैं। बिल्कुल तस्वीरों की तरह दिखते हैं बंगले...! कमरे में फर्श पर पूरी तरह से कालीन बिछा हुआ था। ओढ़ने के लिए गद्दे जैसी मोटी रजाई दी गई थी। लकड़ी का नक्काशीदार दीवान कश्मीरी शिल्प कौशल का आभास करा रहा था। कश्मीर के हर हस्तशिल्प उत्पाद में चिनार के पेड़ का एक पत्ता होता है। बाथरूम में 24 घंटे गर्म पानी था, रात में हमने पनीर मसाला और मिक्स वेज खाया। तीन मंजिला लॉज की सबसे ऊपरी मंजिल पर मालिक स्वयं श्रीमान थे। इरशाद भाई रहते थे. बड़े दिल वाला आदमी! अपार धन लेकिन वाणी में संयमित। कश्मीर के सभी घरों में बड़ी-बड़ी रंगीन कांच की खिड़कियाँ होती है और खिड़कियों को ढकने के लिए त्रिकोणीय टोपियों का उपयोग किया जाता था। ये रंग-बिरंगी खिड़कियाँ वास्तुकला की सुंदरता में चार चांद लगा देती हैं। सड़क पर आवाजाही बहुत कम थी। हालाँकि, आंतरिक सड़कें बहुत संकरी थीं और हमें कोंकण की सड़कों की याद दिलाती थीं। प्रत्येक घर की परिसर की दीवारें ऊँची हैं। हर घर में एक बड़ा लोहे का गेट होता है। साथ ही वहां सभी का अपना घर भी है। किराये के मकान में कोई नहीं रहता। हर घर के बाहर का बगीचा और बगीचों में गुलाबों से लदे पेड़ कश्मीरी खूबसूरती का नजारा पेश कर रहे थे।पहला दिन हवाई जहाज यात्रा और श्रीनगर की बहुत ही सुन्दर मुगल गार्डन के कारण यादगार रहा।

श्रीनगर की सुबह बहुत सुहावनी थी। नाश्ता ख़त्म करके हम ट्रेवलर गाड़ी में बैठ गये। दिलचस्प बात यह है कि मालिक ने हमें सात दिनों तक घूमने - फिरने के लिए एक बिल्कुल नई टेम्पो ट्रैवलर गाड़ी दी थी। कार के ड्राइवर श्री समीर भाई भी साथ थे। कश्मीर के अधिकांश पुरुष मुझे एक जैसे ही दिखते थे। कश्मीरी युवा गोरे रंग, लंबे, लाल गाल, काले बाल, दो भौंहों से बढ़ती हुई तीखी नाक, गालों पर भरी दाढ़ी और अपने धर्म को पहली प्राथमिकता देने वाले लोग होते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि कश्मीरी महिलाएं भी बेहद खूबसूरत होती हैं।उद्योग व्यवसाय व्यापार में और रास्ते पर कश्मीरी पुरुष ही दिखाई देते हैं महिलाएं घर से बाहर तक कहीं कहीं ही दिखाई देती है।

खास बात यह है कि आज तक (अपवादों को छोड़कर) किसी भी कश्मीरी एक्ट्रेस ने बॉलीवुड में कदम नहीं रखा है। कश्मीरी लोग पश्तून या डोगरी भाषा बोल रहे थे। ड्राइवर समीर भाई से हमें नई-नई जानकारी मिल रही थी। वह मधुमेह से पीड़ित थ, क्योंकि वह दिन भर मेंवल कश्मीरी मूली और खीरा ही खाता था।

गुलमर्ग, श्रीनगर से 80 किलोमीटर दूरी पर ट्रैवलर गाड़ी से हम पहुंचे। गंडोला रोपवे और साइड सीन देखने को मिले। यहां एक अनोखी चीज खोपरा (कोकोनट पेढा) खाने की मिठाई बेहतरीन लगी। यात्रा के पहले दिन की योजनाबद्ध यात्रा 'गुलमर्ग' की यात्रा गुलमर्ग समुद्र तल से 14 हजार फीट की ऊंचाई पर पूरी तरह से बर्फ से ढकी हुई जगह है। किंवदंती है कि गुलमर्ग की बर्फ से ढकी चोटी का नाम "गोंडोला या गंडोला" यह नाम एक ब्रिटिश अधिकारी की प्यारी बेटी के नाम पर पड़ा। जहाँ हमने अपनी गाड़ी पार्क की; वहां एक शिव मंदिर था। चारों ओर अध भरे बर्फ से भरी पर्वत शृंखलाएँ थीं। मंदिर के चारों ओर हरियाली थी। हमें बताया गया कि इसी जगह पर 'जय जय शिवशंकर, काटा लागे या कंकर' गाना सुपरस्टार राजेश खन्ना और मुमताज पर फिल्माया गया था।

'गंडोला' के शीर्ष पर जाने के लिए 2500 रुपये का टिकट देकर रोप वे का सहारा लेना पड़ता है। उसके लिए बहुत बड़ी कतारें थीं फिर हम रोपवे पर चढ़े और फेज वन पर पहुँचे। लेकिन बर्फ नहीं थी। फेज दो पर वापस जाने के लिए रोप वे का इस्तेमाल किया और गंडोला पहुँचे, रास्ते में कुछ बर्फ के साहसिक खेल भी देखे।" गंडोला में जहाँ तक नज़र जा रही थी, बर्फ ही बर्फ थी। मुझे लगा था कि पाकिस्तान की सीमा नजदीक होगी, लेकिन ऐसा नहीं था। बचपन में जिस स्नोबॉल को इतनी जोर से खींचना पड़ता था; लेकिन अब हमारे पैर बर्फ और कीचड़ में ही थे। हम अधाशा की तरह बर्फ में खेले। हाथ पैर बहुत ठंड के मारे हिल रहे थे। मैंने जर्किन्स या गम बूट नहीं पहने थे। ऐसे बदलते और अप्रत्याशित वातावरण में इंद्रधनुष दिखाई दिया (दूध में घी शक्कर जैसा) मैंने अपने जीवन में पहली बार बर्फीले क्षेत्र से इंद्रधनुष देखा। इंद्रधनुष के इस नज़ारे को तो बसमैं देखता ही रह गया। हम सचमुच भाग्यशाली थे। बर्फ पर बिताया हर पल एक सपने जैसा लगता था। एक

स्थानीय हिंदी टीवी चैनल के प्रतिनिधियों ने हमारे समूह के साथ एक साक्षात्कार आयोजित किया और उस साक्षात्कार को 05 जून यानी 'पर्यावरण दिवस' पर प्रसारित भी किया। कश्मीर 'कश्मीरायण' के पहले ही दिन हमें यह महसूस हुआ कि हमारी यात्रा का पूरा पैसा वसूल हुआ।

सोनमर्ग, श्रीनगर से 95 किलोमीटर दूरी पर ट्रैवलर गाड़ी से हम पहुंचे। सिंधु, सतलज और लीडर इन तीन नदियों के साथ साइड सीन देखने को मिले। यहां भी एक्सप्रेसवे बनाने की प्रक्रिया तेज गति से शुरू है। 09 किलोमीटर लंबा बर्फीली पहाड़ों के भीतर से, अत्यंत खतरेला, पहाड़ की ऊंचाई पर सुरंग/ "टनेल" से बनाया जा रहा है। इससे आने वाले कुछ दिनों के बाद यात्रियों का करीब 01 घंटे तक का समय बचने वाला है। "सोनमर्ग" की प्राकृतिक सुंदरता देखने के लिए निकल पड़े। रास्ते में हम एक जगह फल खरीदने के लिए रुके। वहां हमने सेब, केले, लीची,

स्ट्रॉबेरी, चेरी बेरी, बड़े अंगूर, कश्मीरी आम और अन्य अनाम फल खरीदे। यहां देखा गया कि, फल खरीदते समय हमारी तरह मोलभाव नहीं किया जाता। इसी दरमियान हमने देखा कि जगह-जगह पर लोकसभा चुनाव का माहौल गरमाया है। प्रचार का आखिरी दिन होने के कारण प्रचार अपने चरम पर पहुंच रहा था है। तभी उमर अब्दुल्ला की विशाल रैली हमारे सामने से गुजरी। रास्ते में चलते समय हमने सिन्धु, सतलुज, लीडर आदि नदियाँ ग्रीष्म ऋतु में लबालब बहती देखीं। मुझे इन नदियों से बहुत ईर्ष्या हुई थी। नदी का पानी गर्जना कर रहा था और तेजी से आगे बढ़ रहा था, पानी सफेद चमक की तरह चमक रहा था। जानवरों को नहलाना, कपड़े धोना, शरीर को साबुन से नहलाना आदि कोई नहीं था है। सड़क के किनारे न हीं पान तंबाकू-मावा की टपरिया थीं और न चाय की छोटी-छोटी दुकान थी। अधिकतर होटल ही थे। शहर में कहीं भी देशी शराब की दुकान या राशन की दुकान नहीं दिखी।

कश्मीर में भी जगह-जगह विशाल सड़क निर्माण कार्य अग्रसर होता नजर आ रहा था। केंद्रीय मंत्री जो कि महाराष्ट्र के हैं मान्यवर नितिन गडकरी साहब (रोडकारी) की याद यहां भी आ गई। कश्मीर में भी हर जगह सड़क पुल का निर्माण बड़ी शालीनता के साथ मजबूती से चल रहे थे। रास्ते में हमें एक सुरंग भी मिली। यात्रा के दौरान सड़क के एक तरफ विकराल, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ थे तो दूसरी तरफ घाटी में गहरी बहती नदियाँ मनमोहक लग रही थीं, माहौल पल-पल बदल रहा था। तेज और बर्फीली पहाड़ से निकलती ठंडी चुभने वाली हवा,पल में ही सूर्यदेव का दर्शन,धूल मिट्टीभरी तूफान, तो पल में ही बारिश का आना यात्रियों के लिए एक अद्भुत और अनाकलनीय, सुंदर और मनमोहक नजारा दिखता था। आधे घंटे के बाद फिर पूर्ववत सब कुछ एकदम फ्रेश हुआ। हमारे गाड़ी के ड्राइवर ने इस कश्मीरी प्राकृतिक सौंदर्य और वातावरण को लेकर एक मजेदार टिप्पणी की उन्होंने कहा, "बॉलीवुड का फैशन और कश्मीर का माहौल पर कोई भरोसा नहीं कभी भी बदल सकते हैं।" सोनमर्ग घाटी की प्राकृतिक सुंदरता बेहद खूबसूरत है। बर्फीले हरे भरे पहाड़, बीच में विशाल मैदान और चारों ओर बर्फ से ढके पहाड़ पहाड़ ही

पहाड़ थे। हमें बताया गया कि इसी स्थान पर हिंदी फिल्म "बजरंगी भाईजान" शूटिंग हुई थी। पहाड़ के भीतर तक पहुंचाने के लिए हमें वहां घोड़े की सवारी करनी पड़ती है, लेकिन घोड़े की लिद की दुर्गंध असहनीय होती थी।

इस स्थान पर एक छोटी टेकड़ी पर एक मूर्ति ने मेरा ध्यान खींचा जो एक सैनिक की मूर्ति थी। जो अपने घायल साथी सैनिक को ले जा रही थी, उसे देखकर मैं भावुक हो गया। हमें बताया गया कि कुछ पाकिस्तानी गद्दारों ने इस मूर्ति को नष्ट करने की कोशिश की थी। इस कश्मीर की सुंदरता को देखते हुए हम अपने सैनिकों के बलिदान को नहीं भूले, सड़क मरम्मत के कारण से हम सोनमर्ग में "जीरो पॉइंट" तक नहीं जा सके। वहां जाने के लिए कोई अच्छी सड़क नहीं थी। बाद में पता चला कि वहां अखरोट के बगीचे हैं। इस स्थान पर पर हमने बहुत सारे अखरोट खरीदे। अखरोट को देखने के बाद मुझे लगा कि इसकी मानव मस्तिष्क-भेजा जैसी प्रतिकृति है। सोनमर्ग से श्रीनगर लौटते समय रास्ते में हमने हस्तशिल्प

का सामान खरीदा। कश्मीर में जैकेट, टोपी, मफलर, खिलौने और शॉल बहुत सस्ते हैं।

यात्रा का हर दिन हंसी मजाक से चल रही थी। चौथा दिन पहलगाम जाना तय हुआ था, श्रीनगर से 90 किलोमीटर दूरी पर ट्रैवलर गाड़ी से हम पहुंचे। जगह-जगह कश्मीरी सफरचंद के बगीचे, अखरोट के पेड़ घाटी, कश्मीरी बकरियां,घोड़े,नदी झरने और यहां का प्राकृतिक सुंदर नजारा देखते-देखते हम पहलगाम पहुंचे। यहां हमारा दो दिनों का प्रोग्राम रहा। सिंधु, सतलज के साथ मुख्य रूप में लीद्दर/लीडर इन तीन नदियों के साथ साइड सीन जगह-जगह देखने का अनुभव किया। यहां भी एक्सप्रेस वे बना है पिछली बार जब हम 08 साल पहले गए थे तब करीब 09 घंटे लगे थे। अब 04 घंटे का सफर करते ही पहलगाम पहुंच गए। पहलगाम न केवल भारत का स्वर्ग है, बल्कि पृथ्वी का भी स्वर्ग है। श्रीनगर से पहलगाम तक 90 किमी लंबी सड़क है। श्रीनगर के रास्ते में, हमने कश्मीर के शासकों और राजवंशीय उत्तराधिकारियों, श्री उमर अब्दुल्ला, मुफ्ती मोहम्मद सईद के अत्यधिक संरक्षित बंगले देखे। हम राजभवन के पास पहुंचे लेकिन भारी यातायात के कारण हम महत्वपूर्ण स्थान "लाल चौक" नहीं जा सके।

रास्ते में भारतीय सेना के बड़े-बड़े कैंप देखने मिले। यहां हमारे भारतीय जवानों द्वारा खड़े होकर भारत माता की रक्षा करने का दृश्य भी जगह-जगह देखने को मिला। यहां हम एंबुलेंस के सायरन की आवाज लगातार सुनते हैं, जैसा कि कश्मीर-श्रीनगर में भी है, लेकिन ये सायरन सैनिकों की कारों के होते हैं। हमें सड़क के दोनों ओर सेब के बगीचे देखने को मिले। सेब के बगीचे में अभी भी छोटे-छोटे हरे सेब लगे हुए थे। हम पंपोर गाँव के पास रुके जहाँ एक विशाल पठार पर केसर का खेत था और दोनों तरफ केसर और सूखे फलों के शोरूम थे। सड़क के किनारे. वहां हमें कश्मीरी चाय यानी "कावा" आयुर्वेदिक चाय पीने मिली। हमें तमाम महंगे सूखे मेवों के नमूने चखने को मिले और साथ ही असली केसर का स्वाद चखने का तरीका भी सीखने को मिला। हममें से कुछ लोग ड्राईफुट खरीदने के बजाय वहां सैंपल लेने गए। वहां हमने केसर खरीदे। मैं भी केसर के खेतों में घूमा लेकिन मौसम

की कमी के कारण मुझे केसर का एक भी फूल देखने को नहीं मिला। इसके बाद आगे जाने पर हमें सड़क के दोनों तरफ लकड़ी से बल्ले बनाने वाली फैक्ट्रियां दिखीं और वह दुकान भी देखने को मिली जहां से सचिन तेंदुलकर ने बल्ला खरीदा था। बारामूला, उरी पठानकोट के गांव सड़क के किनारे थे लेकिन आप इन गांवों को सिर्फ वहां हुए बम धमाकों की वजह से जानते हैं। चूँकि कश्मीरी लोगों का स्वास्थ्य अच्छा है, इसलिए वहाँ अधिक अस्पताल नहीं हैं, रास्ते में हमें एक सुंदर गुरुद्वारा दिखाई दिया, जहाँ से पहाड़ों का पानी सुंदर लग रहा था। झरने का पानी बहुत साफ़, ठंडा और चिकना था। इसलिए बिसलेरी पानी पीने की कोई जरूरत नहीं थी।

हमने सेब के बगीचे में बने होटल में दोपहर का भोजन किया। आसपास की प्रकृति को देखना मतलब एक फिल्म देखने जैसा था। पहाड़ियों पर हरियाली और ऊंचे-ऊंचे पेड़ आसमान को छू रहे थे। लीडर नदी घाटी से होकर बहती थी। पहलगाम जाने के बाद हमें एक अलग ही दुनिया में प्रवेश करने का आनंद मिला। पहलगाम पहुँचकर हमने नदी के किनारे बड़े अक्षरों में "आई लव पहलगाम" लिखा एक बोर्ड देखा, जहाँ सभी लोग तस्वीरें लेते नज़र आ रहे थे। मुझे ऐसा लगा जैसे पर्यटकों को 'फोटोफोबिया' हो गया हो। ऊपर (बाएं से दाएं) उर्दू में लिखा था, "अगर धरती पर स्वर्ग है तो उसकी पहचान भी तुरंत हो गई। बर्फ से ढकी चोटियां भी यहीं थीं।" कई बार सूरज के तेज किरन के कारण पिघलती हुई बर्फ को भी देखने का अनुभव है। हरी-भरी हरियाली, सुंदर फूल, ऊँचे वृक्ष आदि स्वर्गीय आनंद दे रहे थे। हमारा प्रवास पहलगाम के एक ऊंचे स्थान पर "शबाना पैलेस लॉज" में था। यह महल प्रकृति की गोद और पहाड़ पर स्थित था। रास्ते में हमने भोलेनाथ शिवजी का प्राचीन मंदिर देखा, जहाँ हमने सिर झुकाया और लॉज में आराम किया। पहलगाम जैसी शांतिपूर्ण जगह मुझे पहले कभी महसूस नहीं हुई। यदि आप चौथे दिन उठते हैं और खिड़की से बाहर देखते हैं; ऊंचे-ऊंचे बर्फीले पहाड़ों, सिस्तापर्णी, देवधर, देवदार के पेड़ों के बीच से झांकते सूर्योदय को देखा। वहां सूर्योदय आमतौर पर शाम 5:30 बजे होता है। सुबह के सन्नाटे में अनायास ही मस्जिदों से निकलने

वाली अजान से अरबी भाषा के स्वर हमारे कानों पर पड़े तब माहौल बड़ा मनमोहन था।

हम पहलगाम पहुंचते ही प्राइवेट कार कार गाड़ियों से निकले- लोकल साइट सीन देखने के लिए। करीब 25-30 किलोमीटर के भीतर प्रति व्यक्ति 300 से 500 खर्च आता है। 1. आरुव्हॅली 2. चंदनवाड़ी 3. बेताब व्हॅली इन तीन स्थानों को देखा।ये सभी स्थान कश्मीर के सबसे दर्शनीय (अवश्य देखने योग्य) स्थानों में से हैं। अरु घाटी का जो दृश्य हमने 360 डिग्री के कोण से देखा वह प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत चमत्कार था जिसे अनुभव करना बिल्कुल असंभव है मेरे जैसे नवयुवक को वर्णन करने के लिए। इस स्थान पर "कश्मीर की कली", बजरंगी भाईजान, कर्मा आदि फिल्मों की शूटिंग की गई थी। बेताब घाटी भी अरु घाटी का एक दर्शनीय स्थान है, जहां फिल्म बेताब के "जब हम जहां होंगे जाने कहां होंगे" की शूटिंग की गई थी सनी देवल और अमृता सिंह के साथ तैयार गाना आंखों के सामने आ गया। विशेष रूप से उस फिल्म में घर की झोपड़ी को अभी भी बरकरार देखकर मुझे अपने व्यस्त कॉलेज के दिनों की याद आ गई, विशेष रूप से, मैंने घने पेड़ों से घिरे स्थानों को देखा, जिनके नाम कश्मीर में फिल्मों के नाम पर रखे गए थे, मुझे अपने पसंदीदा गायक किशोर कुमार की आवाज याद आ गई। "तेरे बिना जिंदगी से कोई शुक्कू नहीं" फिल्म "आंधी" का यह अविस्मरणीय गाना सुचित्रा सेन और स्वर्गीय संजीव कुमार पर फिल्माया गया था। बाद में चंदनवाड़ी में हमें फिर से बर्फ को छूने का मौका मिला। रास्ते में बेताब वैली के पास से गुजरते हुए हमने एक जगह देखी जगह जहां भारतीय सेना की गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त होकर घाटी में गिरी थी और कई जवानों को शहीद होना पड़ा था। रास्ते में पहाड़ी पर शंकराचार्य का प्रसिद्ध मंदिर था, लेकिन हमने भारी थकान के कारण नीचे से ही दर्शन किये। सफर के दौरान मेरी ड्राइवर समीर भाई से बात होती रहती थी। मैं उनके साथ कई विषयों पर चर्चा करता था, मूलतः मेरी रुचि कश्मीर के अध्ययन में थी और मैंने समीर भाई से कश्मीर के इतिहास, भूगोल, संस्कृति, रीति-रिवाजों और परंपराओं के बारे में गहन चर्चा की। विशेषकर आतंकवाद के मुद्दे पर मेरी उनसे खुले मन से चर्चा हुई।

बातों-बातों में उन्होंने मेरे कई प्रश्नों के सीधे-सीधे जवाब 'नहीं' दिया। मैंने यात्रा के दरमियान अनुभव किया कि कश्मीरी लोग बहुत विनम्र और ईमानदार होते हैंवह पर्यटकों कादिल नहीं दुखातेअधिक से अधिकबेहतर सेवा देने मेंतत्पर रहते हैं पोशाक।

पहलगाम से मिनी स्वीटजरलैंड यहां से करीब है,घुड़सवारी का अनुभव यहां भी ले सकते हैं। 1000 से लेकर 2400 तक एक व्यक्ति एक घोड़ा लेकर आप वहां पहुंच सकते हैं।यहां से अमरनाथ यात्रा के लिए भी आप निकल सकते हैं। करीब 25 किलोमीटर पैदल और घुड़सवारी के आधार पर आप जा सकते हैं। फिल्म 'बजरंगी भाईजान' का अधिकतर चित्रिकरण इसी क्षेत्र में हुआ है। मिलिट्री का सख्त और कड़ा पहरा यहां लगा रहता है लेकिन हम लोगों के लिए ही वे खड़े हैं, बाकी कोई दिक्कत या परेशानी नहीं होती। पहला दिन हमारा यहां समाप्त हुआ। कश्मीर में कहीं भी आप जाए आपको खाने में मिक्स वेज, पनीर सब्जी, और दाल चावल ही मिलेंगे। दो रोटी बहुत ही छोटा आकार वाली। नॉनवेज में आपको अधिकतर चिकन ही मिलेगा। चाय के साथ ब्रेड और नाश्ते में उबला हुआ अंडा या आमलेट ब्रेड या पोहा का ॅमन रहता है। चूँकि हमें होटल में कश्मीरी व्यंजनों के नाम नहीं पता थे इसलिए हमने इशारा करके खाना खरीदा और उसका स्वाद चखा। जब हम वहां थे तो शाम के 7:30 बज रहे थे, लेकिन 8:00 बजे सब कुछ साफ और स्पष्ट दिखाई दे रहा था सूरज बहुत देर बाद डूबता है यह भी अनुभव किया।

पहलगाम के लीडर नदी किनारे रंग-बिरंगे फूलों से लड़े बगीचे में हमने कश्मीरी पोशाक पहनकर तस्वीरें खिंचवाई। कुछ पलों के लिए हम कश्मीरी और फिल्मी हीरो हीरोइन जैसे ही लग रहे थे जगह-जगह पर लोग तस्वीर खींचने में व्यस्त दिखते थे कश्मीरी पोशाक किराए पर देना और फोटो खिंचवा कर देना और फिल्मी गीतों के आधार पर रिल बनाकर देना भी यहां के लोगों का एक व्यवसाय है।

पहलगाम में ही हमने चाय नाश्ते के बाद हम कुछ ही दूरी पर स्थित मार्केट चले गए। वहां स्वेटर, जैकेट, मफलर, लेडिज के लिए पांचों, ट्रैवलर बैग खरीदे। यहां आपको मोलभाव करके ही सारा सामान खरीदना पड़ेगा। ढाई हजार, 2000 का स्वेटर हमने 700 -1000 में, 1500-1800 का स्वेटर 300-500 में भी मिलता है। कुछ लोग यहां से ही मिनी स्विट्ज़रलैंड देखने के लिए चले गए वहां घुड़सवारी से ही जाना पड़ता है। जगह-जगह आपको अखरोट 1 किलो 400, रु 500 के भाव में बेचनेवाले युवा लड़के मिलते हैं लेकिन यहां भी आपको परखकर ही खरीदना पड़ेगा। पुराना माल भी यहां मिक्स करके बेचा जाता है। दोपहर खाना खाने के बाद खरीद किया सामान होटल पर छोड़ दिया। पहलगाम में एक शिवजी का भी मंदिर है जो काफी पुराना माना जाता है। जहां हम शबाना पैलेस में रुके थे, बराबर उसके करीब ही वह मंदिर था। वहां से एक झरना भी बहता है। देर रात खाना खाया और सुबह 9:00 बजे फिर श्रीनगर की ओर प्रस्थान किया।

हमारे यात्रा प्रबंधक ने पहलगाम में ठहरने की अवधि बढ़ा दी। महिलाओं ने इसका भरपूर फायदा उठाया, खरीदारी के लिए बाजार जाते समय महिलाएं खाली बैग और भरे पर्स लेकर धावा बोल देती थीं। भारी खरीदारी की गई। शॉपिंग करते समय मुझे पता ही नहीं चला कि मेरे पैर इतने दर्द कर रहे हैं इस सबका नतीजा यह हुआ कि रास्ते में हमारे सामान में एक बैग और जुड़ गया। कुछ लोगों ने ठंड से राहत पाने के लिए आवश्यक उत्तेजक और गर्म पेय खरीदे। होटल में रात्रिभोज के बाद, दोपहर में हमने घोड़े पर सवार होकर "मिनी स्विट्जरलैंड" का दौरा किया। यह बहुत ही अविस्मरणीय अनुभव था। मेरे घोड़े का नाम ‘बादल’ था और मैंने उस घोड़े को बिना किसी की मदद के चलाया। मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं किसी पुरानी फिल्म का हीरो हूं। मिनी स्विट्ज़रलैंड अपने नाम के अनुरूप ही पहाड़ की चोटी पर स्थित एक खूबसूरत जगह है।

पहलगाम अमरनाथ यात्रा का प्रारंभिक बिंदु या पगतल है। पहलगाम से अमरनाथ तक पहाड़ी घाटियों से होकर 32 किमी लंबी और मुश्किलों से भरी यात्रा है। घोड़े पर जाने में दो दिन और पैदल चलने में तीन दिन लगते हैं। वास्तव में,

पहलगाम को स्वर्ग का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है। शायद महाभारत के पांडवों ने अपने जीवन की अंतिम यात्रा करने के लिए स्वर्ग (हिमालय) की यात्रा इसी स्थान से शुरू की थी। इस तरह हम दो दिन तक पहलगाम की जन्नत में रहे।

यहां हम पहलगाम से वापस फिर श्रीनगर, आए। रास्ते में जगह-जगह अकरोड के साथ ड्राय फ्रुट के दुकानों को भी देखा। कश्मीर की शॉल भी प्रसिद्ध है। कावा-मसालेदार चाय, सुगंधित चाय का अनुभव लेते हम श्रीनगर पहुंचे। यहां ट्युलिप गार्डन बहुत प्रसिद्ध है लेकिन अप्रैल महीने में ही वह खुली रहती है। यहां राज्यपाल का निवास स्थान है इसी कारण वहां जाने के लिए मना है। कश्मीर में अनेक प्रसिद्ध बागीचे अर्थात गार्डन है। इनमें से एक है मुगलकालीन "चेसमाशाही (शाही झरना)", या शाहजहां गार्डन भी कहा जाता है। कश्मीर के गवर्नर का निवास स्थान की ओर यहां से रास्ता जाता है। कारण आपको लोकल रिक्शा या कार गाड़ी से सवारी करनी पड़ती है। 50 तक हर व्यक्ति के लिए चार्ज लगाते हैं। बहुत ही सुंदर गार्डन है। रंग-बिरंगे फूल और प्राकृतिक झरना और झरने का जल स्वादिष्ट है।उसके बाद श्रीनगर में ही कुछ ही दूरी पर स्थित बोटैनिकल गार्डन पहुंचे। सचमुच दुनिया के अलग-अलग पेड़ पौधे और प्राकृतिक नजारा देखने लायक ही था।

करीब करीब 34 किलोमीटर दूरी तक पहले दल लेक/ प्रसिद्ध दल सरोवर के किनारे किनारे से चक्कर लगाते दुनिया का प्रसिद्ध 'हजरतबल दरगाह', भी हमने देखा। यहां हिंदू लोग भी शांति से प्रार्थना कर सकते हैं। यहां मोहम्मद पैगंबर साहब का एक दाढ़ी का बाल रखा हुआ है, जिस से लाखों लोगों की आस्थाएँ जुड़ी हुई हैं। कश्मीरी भाषा में 'बल' का अर्थ 'जगह' होता है, और हज़रतबल का अर्थ है 'हज़रत (मुहम्मद) की जगह'। हज़रतबल दल झील/ दल सरोवर की बाई ओर स्थित है और इसे कश्मीर का सबसे पवित्र मुस्लिम तीर्थ माना जाता है।

सब कुछ देखते-देखते शाम के 5:00 बज गए थे और दल सरोवर के किनारे हम पहुंच गए। यहां हम शिकारा पहुंचे। एक शिकारे में दो या तीन अधिकतर चार आलीशान कमरे बने रहते हैं। दल सरोवर के किनारे हजारों शिकारों में लोग रहते हैं। पानी के भीतर रहना एक अलग अनुभव महसूस करते हैं। आपको सारी

सुविधाएं यहां मिल जाती हैं। यहां तक की कश्मीर की सारी चीजें बेचने के लिए लोग अपने-अपने शिकारों को लेकर आपके शिकारे के पास आते हैं। ठंडी हवा के साथ आकाश में चांद चम रहा था और रात का मनमोहक दृश्य मन को अधिक सुकून देता था। 'दल' झील में शिकारा राइड करना और पानी में हाउस बोट पर रात बिताना। एक ऊँचे पहाड़ पर एक "शहीद स्थल" था। शाम को हमने 'हाउसबोट', की सवारी की और पानी में हाउस बोट पर रहने चले गये।" हाउस बोट" का अर्थ है पानी में तैरता हुआ घर। यह घर लकड़ी की नक्काशी का एक अनूठा उदाहरण था। रसोईघर, स्नानघर, शयन कक्ष, भोजन कक्ष आपके घर की तरह ही विशाल हैं। आपकी सेवा में एक नौकर भी है। डल झील में हाउसबोटों का एक गाँव स्थित है। किराने का सामान, स्टेशनरी, सब्जियाँ शिका से खरीदी जाती हैं। वहाँ रहने के बाद मुझे लगा कि हर व्यक्ति को अपने जीवन में कम से कम एक बार इस हाउस बोट का अनुभव करना चाहिए। डल झील में लिली और कमल के फूल झील की सुंदरता में चार चांद लगा रहे थे। मैंने इस हाउसबोट पर मछली पकड़ने की कोशिश की, लेकिन सौभाग्य से और मेरे लिए दुर्भाग्य से, एक भी मछली नहीं पकड़ी गई, रात में हाउसबोट के मालिक के साथ बातचीत करते समय 'डल झील' में फव्वारे देखने लायक थे हाउसबोट की कीमत तीन करोड़ रुपये तक है। कश्मीर में लोग चीनी वाली चाय नहीं पीते। सुबह-सुबह अरबी अजान से अपने आप जाग उठते हैं। जब मैं बाहर आया तो मैंने 'डल झील' का मनोरम दृश्य देखा, तभी मैंने "हरे राम हरे कृष्णा" की धुन सुनी और मुझे आश्चर्य हुआ और एहसास हुआ कि हम भारत में हैं।

एक रात 'डल लेक' शिकारा में बीतने के बाद चाय नाश्ता के पश्चात हम अपना सारा लगेज इकट्ठा कर और वापस आने की तैयारी में जुट गए। आखरी बार शिकारा में बैठे करीब 01 घंटे तक हमनें शिकारा राइड किया। बहुत ही सुंदर नजारा था। चारों ओर पहाड़, पहाड़ों पर दिखती बरफ, करीब 34 किलोमीटर लंबा दूर पर फैला, दल सरोवर, सरोवर के किनारे किनारे बसे हाउसबोट और बीच-बीच से सफर करने वाले यात्रियों का दृश्य मोहक था। हमने भी अनुभव किया, एक

बेहतरीन अनुभव रहा। आपके शिकारे के पास अन्य कुछ शिकारों को लेकर कुछ कश्मीरी लोग अपनी चीजों को बेचने के लिए, छोटे-छोटे व्यापारी आपके शिकारे के पास आते हैं। अलग-अलग फ्रूट,नक्शीदार लकड़ी की चीजें, शो पीस, अखरोट, मिठाई, महिलाओं की बनावटी गहने, शाल, स्वेटर, जैकेट बहुत कुछ।

अंत में, हमने श्रीनगर में "हज़रत बल" के पवित्र स्थान का दौरा किया, यह एक भव्य मस्जिद थी, जो मुगल वास्तुकला का एक बेहतरीन उदाहरण थी। अत्यंत शांत वातावरण और पास की झील की ठंडी हवा ने मन प्रसन्न कर दिया। वहां मुस्लिम धर्म के संस्थापक पैगंबर मुहम्मद की दाढ़ी का एक बाल रखा हुआ है। उस स्थान पर बैठकर कुछ देर सोचा और सोचा कि यह तीर्थ तैंतीस करोड़ देवताओं में से एक होगा, तभी मेरी नजर एक शोकेस में रखी एक बड़ी किताब पर गयी। वह किताब अरबी कुरान की नकल थी। यह औरंगज़ेब की लिखावट में कुरान था। जब मैंने इसे बहुत सुंदर लिखावट देखी तो मुझे विश्वास नहीं हुआ! मैंने सोचा कि इंसान चाहे कितना भी बुरा क्यों न हो, हर इंसान में कुछ न कुछ अच्छाई जरूर होती है। अंत में, हमने श्रीनगर के सभी निवासियों से विदाई ली। हमने उन सभी सेवकों को पुरस्कृत किया जिन्होंने हमारी बहादुरी से सेवा की और हम हवाई अड्डे के लिए रवाना हो गए। यह दिल्ली से जम्मू होते हुए था। दिल्ली पहुंचने के बाद अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पर आंखें नम थीं। दिल्ली हवाई अड्डे पर चाय पीने का मन था लेकिन एक कप चाय की कीमत 360 रुपये सुनकर चाय की चाहत खत्म हो गई। हम रात को दिल्ली से मुंबई सुरक्षित पहुंच गए लेकिन हमारे कुछ साथियों के बैग वहीं छूट गए और अगले दिन वो सब आए कूरियर द्वारा। बैग घर पर सुरक्षित पहुंचाए गए। हम मुंबई से वैभव ट्रैवल के स्लीपर कोच से पहुंचे। मुझे रात को नींद नहीं आ रही थी, कश्मीर की प्रकृति मेरी आँखों से ओझल नहीं हो रही थी। क्या पहाड़ है!!! क्या घाटी है!!! वह बर्फ क्या है!!! क्या झाड़ी है!!! सब कुछ कैसे है झक्कास...?

सचमुच यादगार रही दोबारा कश्मीर यात्रा। एक नए अंदाज और एक नए अनुभव के साथ। सातवें और आखिरी दिन हमने पूरा श्रीनगर देखने का फैसला

किया। इसमें कश्मीर के सभी मुगल गार्डन देखे गए, जिनमें मुगल गार्डन, चश्मे शाही गार्डन, इंदिरा गांधी बॉटनिकल गार्डन, ट्यूलिप गार्डन आदि शामिल हैं। प्रत्येक उद्यान में प्रवेश शुल्क है। कश्मीरी उद्यान ईस्टमैन कलर के फूलों से भरे हुए थे और कोई भी गुलाब के पेड़ों को बैठकर देखना चाहता था क्योंकि एक गुलाब के पेड़ में कम से कम 70/80 पूर्ण खिले तांबे के फूल और इतनी ही संख्या में कलियाँ होती थीं। इसलिए मुझे अपने बगीचे में गुलाबों को लेकर बहुत दुख हो रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे प्रकृति ने अपने मुक्त हाथों से रंग बिखेरे हों, सचमुच कश्मीरी बगीचे धरती पर स्वर्ग हैं। उस सफ़ेद मिट्टी का गुण क्या है!!! मैंने ऐसा सोचा था; बॉटनिकल गार्डन में जाने के बाद, मैंने फिल्म "सिलसिला" के रोमांटिक गाने "देखा एक ख्वाब तो सिलसिले हुए" के सामने डांस करना शुरू कर दिया, जिसमें सुपरस्टार अमिताभ बच्चन और रेखा थे, लेकिन दुर्भाग्य से हम ट्यूलिप का आनंद नहीं ले पाए ट्यूलिप का कोई मौसम नहीं। संक्षेप में, रेखा के साथ अमिताभ बच्चन का सपना और ट्यूलिप गार्डन का हमारा सपना टूट गया। !लेकिन हमारे दिल वहां कई अनजाने फूलों से भर गए। शहर में मुगल उद्यानों की सुंदरता देखकर सचमुच थक गया हूँ! दरअसल, अच्छे बगीचे देखने की आदत डालनी होगी।

आखिरकार हमने श्रीनगर को बाय-बाय कर हवाई अड्डे पर पहुंचे। 08 साल पहले हम श्रीनगर गए थे और इस साल भी गए तो एक फर्क निश्चित रूप से दिखाई दिया कि अब कश्मीर पूरी तरह से खुला हुआ है काफी भीड़ भरे रास्ते, यातायात के साधनों की भरमार हमने देखी। हमारा कुल 25 लोगों का ग्रुप था। चार विमानों में से अलग-अलग समय पर हमें मुंबई पहुंचना था। श्रीनगर में भी देखा की हवाई अड्डे पर पानी की बोतल 100, सैंडविच 350 रुपए, चाय सौ रुपए पर मिलती है। अपने परिवार जनों के लिए स्वेटर, पांचों, जैकेट आदि खरीदने के कारण हर एक के पास चार-चार बॅग हुए थे। ध्यान रहें हवाई जहाज में सिर्फ एक व्यक्ति के लिए 15 किलो का लगेज और हैंडबैग में अधिकतर 05-07 किलो तक ही समान आप ले सकते हैं। उसके आगे आपको एक्स्ट्रा एक किलो से लेकर 5 किलो तक के लगेज के लिए 3000 रुपए देने पड़ते हैं। हवाई जहाज का अनुभव

बेहतर रहा। श्रीनगर से मुंबई सीधा प्रवास 3 घंटों से अधिक रहता है। चेकिंग के लिए दो, ढाई तीन घंटे चले जाते हैं। लगेज में आप अलग-अलग प्रकार के सामान रख सकते हैं लेकिन ज्वलनशील,हथियार, ब्लेड, चाकू, छुरी आदि नहीं रख सकते। हैंडबैग में हमने कश्मीरी तीखा मसाला(कश्मीरी लाल चटनी) लिया था। अंजानवश ध्यान में नहीं आया। हवाई अड्डे पर पुलिसवालों ने उसे मेटल डिटेक्टर द्वारा चेक करने के बाद निकाल कर फेंक दिया। ध्यान रहे की हैंडबैग में तीखा और नुकीला, हथियार या बॉडी स्प्रे जैसी चीज़ ले जाने के लिए मना है। हवाई यात्रा का अनुभव भी एक अलग रहता है। हवाई जहाज बहुत ऊंचाई पर पहुंचता है तब सिर्फ खिड़की से झांकने के बाद सफेद नीला, बर्फीला समूह आकाश दिखता है है। मुंबई पहुंचने के बाद फिर हवाई अड्डा से निकलकर प्राइवेट टैक्सी से ट्रैवल स्थान पर पहुंचे और स्लीपर कोच लग्जरी गाड़ी से वाठार कोल्हापुर और वारणानगर सुबह 9:00 बजे घर वापस पहुंचे।

इस यात्रा वर्णन को पढ़ने के बाद हर किसी को कश्मीर घूमने की इच्छा जरूर होगी तो दोस्तों आपको बिना झिझक कश्मीर जाना चाहिए। जिंदगी को जन्नत बनाओ जैसे जिंदगी मुंबई। हर किसी को ये महसूस होना चाहिए कि सिर्फ कश्मीर मेरा है। भारत के लिए कश्मीर उतना ही महत्वपूर्ण है जितना मोर के सिर पर कलगी। मैं यात्रा संयोजक, मेरे सभी सहयोगियों और मेरी भाग्यशाली साथी और परिवार जनों को भी धन्यवाद देता हूं क्योंकि केवल उनके कारण ही मैं वास्तव में अपने सपनों के कारण ही कश्मीरायन कर सका।

संक्षेप मे कश्मीर यात्रा एक बार हर व्यक्ति को करनी चाहिए। कश्मीर के लोग प्रचंड मेहनती, पुरुष ही अधिकतर रास्तों पर मेहनत करते हैं। घर परिवार में महिलाएं। रास्तों पर या उद्योग व्यवसाय करने वाली एक भी महिला बाहर दुकान या रास्तों पर दिखती नहीं। छोटे-छोटे बच्चे स्कूल जाते नजर आए उसमें बच्चियां भी थी। कश्मीर अब खुला होने के कारण काफी भीड़ लोगों की और यातायात साधनों की रास्तों पर दिखती है। कश्मीर में भी अब अलग-अलग जगह टनल, रास्ते बनाए जा रहें हैं। अधिकतर कश्मीरी लोग गोरे चिट्टे, नुकीली सरल नाक वाले,

ऊंचा कद, सपाट पेट वाले। अधिकतर लोग इमानदार। लेकिन हर चीज खरीद के लिए आपको उनके साथ बारगेनिंग करना पड़ेगा। खाने में अधिकतर सादा खाना खाते हैं। व्हेज खानें में दाल रोटी, मिक्स सब्जी, फ्रूट, जूस, पनीर सब्जी आदि। नॉनवेज में अधिकतर 80% लोग चिकन ही खाना पसंद करते हैं। मांग करने के बाद आपको कश्मीरी बकरी का मांस भी मिलता है। अंडामलेट,पोहा, वेज, नॉन वेज एक साथ खाते हैं। खाने में मसाला, तेल, तिखा, नमक ना के बराबर रहता है। इसी कारण महाराष्ट्रीयन लोगों को यह खाना एक-दो दिन के बाद खाने के लिए कठिन लगता है। कश्मीर में आप कहीं भी पानी पिए आपको साफ सुथरा ही मिलेगा। बिसलेरी, फिल्टर वॉटर की जरूरत ही नहीं पड़ती। इसी कारण हम दोबारा यात्रा सफल कर पाएं। सच है कश्मीर हर इंसान के लिए स्वर्ग तो है हीं जन्नत से भी कम नहीं है।

संपर्क:

हिंदी विभाग अध्यक्ष एवं शोध- निर्देशक,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, संलग्न,
वारणा विश्वविद्यालय, अंतर्गत
यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय,
वारणानगर-416113, जिला- कोल्हापुर, (महाराष्ट्र)
ई - मेल - drprakashchikurdekar@gmail.com